अध्याय 4

गिरिजाकुमार माथुरजी का प्रयोगवादी काव्य - प्रवृत्तिगत प्रयोग

सन 1937 से आज तक गिरिजाकुमार माथुर विपुल काव्य रचना कर चुके हैं। इस लंबे समय में हमारे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन में भी अनेक चढाव उतार आये है। जिनका प्रभाव गिरिजाकुमार माथुरजी के रचनाओंपर पडा हैं। और उन्हें प्रस्तुत करने को कवि का हृदय आकुल-व्याकुल हो रहा हैं। माथुरजी की अनेक रचनायें आज भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर उनकी शोभा और भी बढ रही है। जिनमें से कुछ विविध संकलनोंमें संकलित की गई हैं और कुछ अभी भी वहीं विद्यमान हैं। इस तरह आपने एक दीर्घ अवधि से काव्य के क्षेत्र में नयी-नयी उद्‌भावनायें की हैं। नयी-नयी कल्पनायें की हैं अपनी प्रतिभा के द्वारा चिन्तन-मनन की नवीनता और मार्मिकता से हिंदी काव्य को सजाया है। इतना ही नहीं तो अपने सतत परिवर्तित जीवन-मूल्यों, घोर विषमताओं, भयंकर कुंठाओं, विविध संघर्षामयी अवस्थाओं, स्वार्थ एवं आकांक्षा से प्रेरित भीडों, विश्वव्यापी विषम समस्याओं आदि का भी अनुभव किया हैं। जिनको कविताओं के माध्यमसे जन-जन के हृदय तक पहुँचाने का कार्य आपने बडी सतर्कता एवं समीचीनता के साथ किया हैं। अतः आपकी अनुभूति बडी गहन एवं गंभीर हैं। आपका चिन्तन मनन प्रौढ हैं। आपकी उद्‌भावनायें अधिकाधिक मार्मिक एवं मनोरंजक हैं, तथा आपकी सृजन शक्ति अत्याधिक समर्थ एवं प्रबल हैं।

प्रणयानुभूति

गिरिजाकुमार माथुरजी के प्रारंभिक कविताओं में प्रणय का स्वर अधिक दिखायी देता हैं। कुछ समीक्षक तो कवि माथुर को रंग, रस और रोमांस का ही कवि मानते हैं। जैसे कि डॉ. प्रभाकर माचवे ने लिखा भी हैं - 'आपकी कुछ कवितायें अपनें में सुहागरात का-सा सौरभ सिमटाये, रजनीगंधा सी मदिर और वायवनिक हैं उनमें, मध्यमवर्गीय सुखैषणा और कीट्स की-सी इंद्रियगोचन सौंदर्यप्रियता है, जो वायवी नहीं नांसल और भौतिक हैं।'

अपने 1938 ई. एक गीत लिखा जो उनकी मादक एवं मोहक भावना का प्रतीक हैं। ।

बडा काजल आँजा हैं आज
भरी आँखोमें हलकी लाज
तुम्हारे ही महलों में प्राण
जला क्या दीपक सारी रात

निशा का-सा पलकों पर चिंह
जागती नींद नयन में प्रात
रोज से जल्दी हुआ प्रभात
छिंप न पाया पूनो का चाँद 2

ऐसे ही कवि ने संयोग शृंगार के कितने ही मनोहर एवं मधुर चित्र अपनी कविताओं में अंकित किए है, जिनमें मादकता, सरसता और आकर्षण के साथ-साथ नवीनता भी दिखायी देती है।

कवि घरमें अकेले में रेडिओ सुन रहें हो चाहें उदास संध्या हो कवि को मेंहदी रंगे गोरे हाथ पर मुँह टिकाये, आँखें बंद किये, प्रियतमा का मुखडा हर समय याद आ जाता है। कभी-कभी प्रियतमासे संबंधित छोटी से छोटी और नगण्य वस्तु भी उसकी याद को उकेर देती है।

आज अचानक सूनी-सी संध्या में
जब मैं यों ही मैले कपडे देख रहा था
किसी काम में जी बहलाने
एक सिल्क के कुर्ते की सिलवट में लिपटा
गिरा रेशमी चूडी का
छोटा-सा टुकडा
उन गोरी कलाइयों में जो तुम पहिने थी
रंग भरी उस मिलन रात में
मैं वैसा का वैसा ही
रह गया सोचता
पिछली बातें
दूर कोर से उस टुकडे पर
तिरने लगी तुम्हारी सब लज्जित तस्बीरें'। 3

'चूडी का टुकडा' तथा 'केसर रंग रंगे' हुए बन उनकी आसक्ति के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

'मंजीर' तथा 'नाश और निर्माण' ये दोनों रचनाएँ रोमानी रुप और आभा से मंडित हैं। 'मंजीर' के गीतोमें उन्होंने किशोर हृदय की रंगीन भावकल्पनाओं को स्वर प्रदान किया है। 'मंजीर' की प्रथम कविता 'थोडी दूर और चलना है' की पंक्तियाँ सादगीभाव और गेयत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

थोडी दूर और चलना हैं
मुरझ चली प्राणों की गुंजन
थकती जाती स्वर की कंपन
बीती सब जीवन की सिहरन ।' 4

'ओ गीतों के पथिक', 'इसी सुनसान विजन बन में रुकना है' 'मंजीर' के गीतों की सरसता और सादगी को देखकर निरालाजी ने भूमिका में कहा हैं - 'श्री गिरिजाकुमार माथुर निकलते ही हिंदी की निगाह खींच लेनेवाले तारे है।' 5

मधुमेलन कवि को उच्छवासों का रहस्य समझा देता हैं और बाद में उसकी यह स्थिति होती हैं, कि प्रिय की लघु तसबीर बन गया मेरा एक-एक आँसू कन' तो कही मन में' यह प्रश्न है कि कितने यौवन करूं निछावर प्राण तुम्हारी रुप राशिपर नीरव सुधियाँ उसे दुकेला बना देती है। सूना जीवन प्रिया का नीरा जन बन जाता है। इसलिए उसे महसूस होता हैं कि आज मिलन भी निकट हो गया दूरी के एकाकीपन में। प्रेयसी कभी आँखों में आ बसती हैं, तो कभी जीवन की प्रथम दूज बनकर भूक मिलन की तसबीरें खींच देती हैं। पूर्णिमा उस प्रिया पर पूजन के चंदन-सी बिखर जाती हैं। माथुरजी उस पार जाना चाहते हैं, जहाँ 'सुख परियों का कोमल-विलास किरणोंका मृदुल-हास, स्वर्णिम सपनों की भीर, मधु के झरने और सुधि का मलय समीर हो कही-कही वह प्रिय को कौन तुम छाया सी अनजान कहता है। तो कही वह प्रिया को हृदय के स्वप्निल गगन की चाँदनी के समान मानता है। प्रेयसी की रुप कल्पना उसके सपनों में रंग जाता हैं तो कहीं प्रिय की छाँह उन्हें मौन प्रेरणा देती हैं। सुधि की यामिनी उसे नशीले जग का आमंत्रण देकर और भी स्वप्निल बना देती हैं।

'रेडियम की छाया', 'सूनी सी', 'उस आधी रात में' प्रणय क्रीडा की सारी रंगीनी रात की यथातथ्य चित्र प्रस्तुत करती है।

उन्हीं रेडियम के अंकों की लघु छायापर
दो छाँहों का वह चुपचाप मिलन था
उसी रेडियम की हल्की छायामें
चुपके का वह रुका हुआ चुम्बन अंकित था
कमरे की सारी छाँहों के हल्के स्वर-सा
पडती थीं जो एक दूसरे में मिल-गुँथकर
सूनी सी उस आधी रात ।' 6

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

रुपासक्ति और आकर्षण प्रेम के महत्वपूर्ण उपदान है। जिनका प्रयोग कवि माथुर ने दिल खोलकर किया हैं। प्रिय मिलन के मधुर कोमल ऐसे क्षणों को शब्दबध्द करते हुअे लिखता हैं -

तुम्हारे आते ही
मेरे कमरे का रंग गोरा हो जाता हैं
हर आईने का चेहरा प्यारा हो जाता हैं
तुम्हारे वदन की रोशनी
मेरे रोओ से होकर
पूरी भीतर आ जाती हैं।' 7

तो प्रिया के साथ बिताये संयोग के नाजुक क्षणोंकी बिना संकोच करते प्रस्तुत किया जो बहुत ही यथार्थ बन गया है।

पिछली इसी वसंत रात की याद उमड आती हैं
जब तुम पहली बार मिली थी
पीले रंग की चूनर पहने
देख रही थी चोरी-चोरी
मेरे मीठे गीत प्यार के, मेरे पास अचानक आकर
छीन लिया था उन्हें तुम्हारे मेहंदी रंगे हुए हाथोंसे
और लाल होकर क्वाँरी लज्जा से
तुमने मुखपर आँचल खींच लिया था
जल्दी से निज चाँद छिपाने।' 8

अपनी समस्त प्रणयनुभूतियों में माथुरजी मन से अलग नहीं कर पाया है। वैसे देखा जाय तो हर काव्यसंग्रह में प्रणयानुभूति काव्य हमें मिलता हैं। जो कवि के इंद्रियता को व्यक्त करती हैं।

'धूप के धान' की 'देह की आवाज' कविता में तो कवि स्पष्ट रुप से देह-धर्म की आवाज सुनता हुआ अपनी भोगवादी दृष्टि का प्रसार करता है। वस्तुतः इस कविता में माथुरजी ने देह का पूरा चित्रण किया है। उनका कहना हैं, अतः शरीर अशांति का कारण मात्र न होकर मानवीय संस्कृति के विकास में भी योग देता हैं। यह देह की शिखा ही शरीर के दीपक की लौ जलाती हैं, और यही वह माध्यम हैं जो प्रिय-मिलन की भूमिका तैयार करता है।

अनेक स्थलोंपर कवि ने पूर्ववती के रुप में अपनी प्रिया की आतुरता का सुंदर चित्रण किया

हैं। पूर्वरीप्ति के प्रसंगों में कवि मिलन के मधुर कोमल क्षणों में डूबता हुआ न केवल दुखी होता है। अपनी मिलनतुरता और पुनःमिलन का संकेत भी करता हैं।

याद आये मिलन वे
मसली सुहागिन सेजपर के सुमन वे
फिर याद आये नत पलक
फिर बिछुडने के अश्रु डूबे नयन वे 9

इसप्रकार स्पष्ट हैं कि माथुर की प्रेमभावना जनित अनुभूतियाँ सूक्ष्म भी हैं और स्थूल भी हैं। उनमें मिलन, मिलनातुरता, लालसा, भोग आदि भावोंका अंकन माथुरजी ने रोमानी शैलीमें पूरी ईमानदारी से किया हैं। प्रणय को शब्दबध्द करनेवाली माथुरजी की अनेक कविताओं में मिलन का संगीत रजनीगंधा की मादकता को भी जगाता हैं, और उन्होंने मध्यवर्गीय व्यक्ति की सुखद लालसाओं के दीपोंका प्रकाश भी फैल दिया हैं।

वेदनाभूति

गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में जैसे मिलन का स्वर मिलता है, वैसे विरह वेदना का भी स्वर मिलता हैं। जीवन के प्रति तीव्र आसक्ति के कारण उन्होंने न केवल सुखद क्षणों की मधुर मादक अनुभूतियों को व्यक्त किया है तो प्रेमजनित्त पीडा, विषाद और निराशा को भी अपने शब्दोंमें कैद किया है। 'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', इन काव्यसंग्रह में प्रणयजीनत्त वेदना दिखाई देती हैं। माथुरजी की विरह भावना में उत्तरोत्तर परिष्कार ही हुआ है। प्रारंभिक 'मंजीर' और 'नाश और निर्माण' में जहाँ प्रिया शरीरसे दूर होने के कारण मन को दुख होता है, वही 'धूप के धान' में शारीरिक प्रेम नहीं तो प्रेम का उज्वल और गार्हस्थिक रुप अंकित हुआ है, आगे की रचनाओं में तो माथुरजी की प्रणय वेदना की अनुभूतियाँ उत्तरोत्तर विकसित होती गई हैं। निराशा का स्वर भी बहुत ही स्वाभाविक बन पडा है। जैसे छायावादी या वैयक्तिक कवियों की रचनाओं में वेदना विरह का चित्रण मिलता है। शरीर से दूर होने पर भी माथुर जी अपनी प्रिया को अपने पास महसूस करता हैं। यह माथुरजी के विकसित मनस्थिति का रुप है। उनके पलकों पर यदि प्रिया का संस्मित आनन और उस प्रिया के काले नयन आते हैं तो निराश रुपी काला अँधेरा भी छा जाता है। जो कवि को यह कहने के लिए मजबूर कर देता है, जैसे -

प्यार बडा निष्ठुर था मेरा
कोटि दीप जलते थे मन में
कितने मरु तपते यौवन में
रस बरसानेवाले आकर
विष ही छोड गये जीवन में
जल की जगह ज्वाल ही बरसी
सदा प्यार के लघु सावन में ।0

कवि की विरहानुभूति विविध रुपों में अभिव्यक्त हुई हैं। कभी तो कवि स्मृति-जन्म विरह वेदना से छटपटाता दिखाई देता है। जैसे -

'आ जाती तुम प्राणा सदा ही चल मेरे सपनों के पथपर
अब सूनी पलकोंपर उतरा वही तुम्हारा सस्मित आनन
वे काली सलज्ज सी आँखे भटकी, भोली सी नत चितवन
होने पर बंद वही रक्ताभ अधर कुछ मुस्काते से
आज भूल जाउँ मैं कैसे ग्राम बालिका सा अल्लडपन ।।

'मंजीर' के अधिकांश गीतों की विशेषता है - निराशा, प्रणयजन्य असफलता, प्रिय से दो क्षण के लिए मिलाप हुआ था। किंतु विदा वेला निकट आ गई और प्रिया से विछोह हो गया। ऐसी अवस्था में कवि अपने आपको असमर्थ महसूस करता हैं। उदा. -

'दो क्षण ही तो मिल पाये हम
और विदा की वेला आई
इतना जल्दी तुम्ही बताओं
कैसे दूँ मैं आज विदाई।' ।2

माथुर की इन रचनाओं में निराशा, पराजय, विषादआदि के साथ कटुता, सूनापन और घुटन का एहसास भी होता है इसी कारण उसे वरदान भी रुठे हुअे लगते है। जैसे -

'एक ज्वार में सिमट गया
खोया जो अपनी ही रेतोमें
मोती बालू बने उसी सागर का रेगिस्तान लिये हूँ।
राजमहल तो उजड गया
पर खँडहर में सपने बाकी हैं
फूल वहाँ के नहीं किंतु फूलों जैसे पाषाण लिये हूँ।' ।3

कवि अपनी प्रेयसी के अभाव में मधुमास को आने की मनाही करता है, उसका निराश, असफल जीवन आहों का कंपन बन जाता है। उसे प्यार बडा कठोर मालूम होता हैं।

'गरम मोम-सा घुलता जीवन
मरते ओले जैसा मन हैं।' ।4

उसे घुटन के साथ 'करुण-पीडा' काटती रहती हैं। वह वेदना की धूप छाया और कसक में जीने लगता है।

'रस बरसानेवाले आकर
विष ही छोड गये जीवन में।' ।5

वैसे देखा जाय तों 'मंजीर' के गीतोंमें महादेवी पंत की शब्दावली ही नहीं कई पंक्तियों में भाव साम्य भी दिखायी देता हैं। जिसमें स्पष्ट होता हैं कि माथुरजी पर छायावादी संस्कार बहुत गहरे हैं, किंतु उत्तर छायावादी कवियों की तरह अमूर्त वायवी न होकर मांसल है।

'नाश और निर्माण' में कथन, उदासीनता, खंडहर और बीते प्यार के स्वर सजीव करनेवाली हुई कवितायें हैं। गीतोंका सही थक कर चूर हो गया है केवल सुधियाँ ही बाकी हैं।

'बीत गया संगीत प्यार का
रुठ गई कविता भी मन की
वंशी में अब नींद भरी हैं
स्वर पर पीली साँझ उतरी हैं
बूझती जाती गूँज आखिरी
इस उदास बन-पथ के उपर
पतझर की छाया गहरी
अब सपनों में शेष रह गई सुधियाँ उस चन्दन के वन की।' ।6

'धूप के धान' में माथुरजी की अनुभूतियाँ बहुत से प्रकृति के माध्यम से आकर गाने लगती हैं। वियोगी, मिलन यादमें दुख भुला चल काले अगरुसे उडे आज बादल।' माथुरजी ने नुकीले वक्ष की छुवन, उकसन, चुभन को भी बडी बारीकी से अंकित किया हैं।

'न्यूयार्क की एक शाम' माथुरजी को भारतीय परिवेश और प्रियतम की यादों में डूबा देती हैं।

'धन, विलास, मद, नृत्य केलि, रस
ऋतु रोमानी तन रोमांचित
कहीं नयन मिल होते शीतल
अपने मन अंगार, सलोनी।' ।7

कवि विलास-मद, नृत्य और रोमानी ऋतु में भी प्रिया के वियोग का जलन महसूस करता हैं।

सुधियों का अधिक रसीलापन 'सिन्धु तट की रात' में व्यक्त हुआ हैं। 'ऋतुचक्र' कवि को अंगों की कचनार कली जैसी शोभा, केसर चुंबन आदि की याद दिलाता हैं जैसे -

'नीली बिजली मेंघोवाली झींगुर की गुंजार
धुन्धभरा साँवर सूनापन हवा लहुरियोंदार
धन घुमडन भुज बंधन के उन्माद सी
बढती आत रात तुम्हारी याद-सी।' ।8

कवि माथुर की प्रणयानुभूति में त्याग और बलिदान की भावना हमें दिखायी देती है।

'बिदा समय क्यों भरे नयन हैं
अब न उदास करो मुख अपना
जाने कितनी अभी और
सपना बन जाने को हैं जीवन
जाने कितनी न्यौछावर को
कहना होगा अभी धूलकन
अभी और देनी हैं कितनी
अपनी निधियाँ और किसी को।' ।9

कवि माथुरजी की विरह भावना में और भी प्रमुख विशेषता हैं। यह भी हैं कि हमने विरही को जीवन से उबते हुअे एकाकी ही आँसू बहाते नहीं देखते, बल्कि उसे चुपचाप विरही व्यथा का भार संभालते हुए भी जीवन जीवन संघर्षो से जुझते हुए देखते हैं। माथुरजी प्रेम और विरह से निकलनेवाली लंबी-लंबी उच्छवासों तथा मधुर कल्पनाओं के पीछे केवल एक ही सत्य मानते हैं, और वह हैं 'शरीर की भूख' तथा उनका मत हैंकि जीवन की भट्टी में तुम्हारें काल्पनिक सपने तथा आदर्श गल जाते हैं। 'प्रौढ रोमांस' नामक कविता में एक स्थल पर कवि कहता है '

'पर मुझको हैं पता
कि बिछुडना की इन तीखी पीडाओं में
उँचे उँचे आदर्शों की इन बातोंमे

छिपा हुआ है भेद कौन सा
काव्य कला की मधुर कल्पना
केवल शारीरिक है
आज नहीं मानोगें तुम मेरी बातों को
नीरस सीख कहोगे जिनकों
पर अपनी खिल्ली कल तुम्ही उडाओंगे
जब दैनिक जीवन की भट्टी में
गल जायेंगे खोटे सिक्के सारे मन के
तब जानोगे इन आदर्शो की सच्चाई।' 20

माथुरजी ने अपनी पत्नि विरह वेदना को केवल यहिं रुप में प्रस्तुत करते हुअे कहा हैं -

'और याद आता संध्या की बेलामें
यह एकान्त मकान
और उजली बाँहो-सी यह दीवारें
नहीं समेट पा रहीं मुझको
और न दिन भर की थकान को मिटा रही हैं।' 21

इससें स्पष्ट हो जाता हैं कि माथुरजी की विरह भावनामें पर्याप्त नवीनता हैं। उन्होंने प्रापंचिक विरह भावना के अलावा प्रवास के भी सुंदर मधुर चित्र खींचे है। 'न्यूयार्क की एक शाम' में विरही नायक को परदेस में अपनी घर-बार की याद आती हैं।

'दुनिया एक मिट गई टूटे नया खिलौना ज्यों मिट्टीका
आँसू की-सी बूँद बन गया मोती का संसार, सलोनी
सभी पराया सभी अचींहा
रंग हजारों पर मन सूना
नभ भवनों में याद आ रहें
वे कच्चे घर-द्वार सलोनी।' 22

इसके अतिरिक्त कवि की विरहानुभूति ऐसी भी हैं कि जब वह विरह में तडपकर रोना-छोना छोडकर घर की, बाहर की, समाज की, मुल्क की समस्याओं में उलझ जाता है। अब विरह व्यथा के कारण उसका मन उतना बोझिल नहीं होता, और नहीं विरह के कारण मुँहपर उदासी छा जाती हैं। वह कटुता से खुलकर संघर्ष करता हुआ कहता हैं -

'मेरे विरही युवा मित्रवर
तुम जिस दुख से परेशान हो
वह सचमुच हैं दुख नहीं कोई जीवन में
असली दुख हैं और बहुत से
तुम जिसको हो समझ रहे भारी पहाड-सा
वह तो कागज-सा हल्का हैं।' 23

माथुरजी के प्रेम काव्य में शृंगार के दानों पक्षों संयोग और वियोग की अभिव्यक्ति हुई हैं। माथुरजी की विरहानुभूति में नवीनता के साथ-साथ स्वाभाविकता, सरसता और मर्म स्पर्शिता भी दिखायी देती है। डॉ. मधुमालती सिंह के शब्दोंमें संक्षेप में कहा जा सकता हैं - 'गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में प्राप्त विरह भावना के विरल चित्र भी अपनी अनुभूति में अनुपम है। उनमें परंपरित विरह व्यथा जितनी मार्मिक हैं उतनी ही उसकी नवीन उद्‌भावना भी। गार्हस्थिक विरह की नवीन उद्‌भावना जीवन के अधिक समीप होने से अत्यंत हृदयस्पर्शी हो गयी हैं।' 24 अतः स्पष्ट हो जाता हैंकि माथुरजी का विरह काव्य बहुत ही मार्मिक बन पडा है।

सौंदर्यानुभूति

सौंदर्यानुभूति की दृष्टि से गिरिजा कुमार माथुर जी काव्य अपनी अलग विशेषताएँ दिखाता हैं। उनके सौंदर्य-दृष्टि का अगर हम गहनतासे अध्ययन करें तो हमारी समझमें आ जायेगा की, उनकी सौंदर्य-दृष्टि न तो छायावादियों की तरह अति रंजित और वायवीय हैं, और न प्रगतिवादियों की तरह अनपढ और अनाकर्षक है, उसमें अपनापर हैं। एक ताजगी है जो प्रयोगवादी कविता की उल्लेखनीय विशेषता हैं। सौंदर्य का वर्णन करते समय कवि भावुक तो हैं। लेकिन कही भी अश्लील नहीं हुआ है। कवि के सौंदर्यवर्णन हमें नारी सौंदर्य और प्रकृति सौंदर्य से गंधित कविताओं में दिखायी देता हैं। नारी सौंदर्य के चित्रण में कवि की स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार की अनुभूति मिलती है। देह सौंदर्य के साथ-साथ मन सौंदर्य और मनोभावों से उत्पन्न सौंदर्य के बिंब भी हमें माथुरजी की कविताओं में बडी मात्रा में मिलते हैं। नारी के रुप-सौंदर्य अंकित करते हुए कवि कहता हैं -

'देह कुसुमित मृणाल
जैसे गेहूँ की बाल
जैसे उचकौंहे बौरों से
रोमिल रसाल

किशमिशी चंद्रलट

कसमसे उस प्रियाल।' 25

गिरिजाकुमार माथुर के सौंदर्यचित्रण में प्रकृति के चित्रोंने भी बहुत योग दिया हैं। मूलतः वे प्रकृति और प्रेम के कवि हैं। प्रकृति की असंख्य छबियाँ अनगिनती रुपोंके साथ माथुरकी कविताओं में आकर बैठ गये है।

अतः नारी सौंदर्य के चित्रण में भी गिरिजाकुमार माथुर का दृष्टिकोन वैयक्तिक कवियों के अधिक निकट हैं। किंतु सौंदर्य चित्रणमें जिस रुप और आभा का समन्वय कवि ने किया उससे यह होता हैं कि, माथुरजीपर छायावाद का प्रभाव हैं। एक स्थलपर कविने अपनी प्रिया का रुप-चित्रण प्रकृतिपर आरोपित किया है।

सौंदर्य बोध को स्थिति-सापेक्ष अनुभूति के साथ संबंध किया गया हैं। गिरिजाकुमार माथुर के शब्दोंमें - 'सौंदर्य की शास्त्र-सम्मत व्याख्याओं के स्थानपर सौंदर्य बोध को स्थिति-सापेक्ष अनुभति के साथ जोडा गया और बर्हिमुखी रम्यता एवं कोमलता के बदले मार्मिकता, तन्मय, स्पंदनशीलता तथा आंतरिक गुणवत्ता को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया हैं। इसप्रकार काव्यगत सौंदर्य तत्व को भाव-स्तर पर ग्रहन किया गया और उसे मात्र 'सुंदरता' का पर्याय न समझकर असुंदर की मर्मानुभूति को भी सौंदर्य बोध के अंतर्गत ही रखा गया।' 26

सौंदर्य बोध की दृष्टि से माथुर अनुपम है। उनकी वातावरण प्रधान कविताओं में सौंदर्य की अनुभूति दिखयी देती हैं। कविने यहाँ रात का कितना नयनमनोहर दृश्य अंकित किया हैं। जैसे -

'रुक कर जाती हुई रात का
अंतिम छाँहो-भरा प्रहर हैं
श्वेत धुएँ से पतले नभ में
दूर झाँवरे पडे हुए सोने-से तारे
भोर के सपने दख रहा हैं अब भी
लम्बे लम्बे धुँधले राजपथों में
निशि-भर जली रोशनी की।' 27

तो दूसरी ओर गिरिजाकुमार माथुर के काव्यमें प्रेम एवं रोमांस का चित्रण नव रोमानी भावना के साथ हुअ हैं। फिर भी अनजाने छायावादी परंपरा की गंध आ ही जाती हैं।

'भारी भारी बादल ऊपर नभ में छाये
निर्जन राहों पर जिनकी उदास छाया हैं
दोपहरी का सूनापन भी गहरा होता
याद-भरे बिछुडन में डूबे इन कमरों में
खोयी-खोयी आँखों-सी खिडकी के बाहर
रुंधी हवा के एक अचानक झोंके के संग
दूर देश को जाती रेल सुनाई पडती।' 28

प्रेम और रोमांस का और एक रोमानी भावसे भरा चित्र -

'सील-भरी कुहार - डूबी चलती पुरवाई
बिछुडन की रातों को ठंडी ठंडी करती
खोये-खोये हुए खाली कमरे में
गूँज रही पिछले रंगीन मिलन की यादे
नींद भरे अलिंगन में चूडी का रिवसलन
मीठे अधरों की वे धीमों-धीमी बाते।' 29

प्रेम रोमांस की ओर उन्मुख होता है। हुआ जिसमें अति यथार्थ, का पुट मिलता हैं।

'आज अचानक सूनी-सी संध्यामें
जब मैं यों ही मैले कपडे देख रहा था
किसी काम में जी बहलाने
एक सिल्क के कुर्ते की सिलवट में लिपटा
गिरा रेशमी चूडी का छोटा-सा टुकडा
उन गोरी कलाइयों में जो तुम पहिने थी
रंग भरी उस मिलन रात में
निकल गयीं सपने जैसी वे रातें
याद दिलाने रहा सुहाग-भरा यह टुकडा।' 30

नव भावना का रुमानी चित्र इसप्रकार अंकित हुआ हैं।

गोरे कपोलों पै हौले से आ जाती
पहिले ही पहिले के
रंगीन चुंबन की-सी ललाई।' 3।

वह उनकी सुधि में लीन है। उसे हेमंत की निस्तब्ध रात अपने कंत से लिपटकर सोई हुई कामिनी के समान लगती है। मिलन के ऐसे चित्रोंमें कवि की शुध्द शृंगार भावना दिखायी देती हैं। अपनी अनुभूति की निरछल अभिव्यक्ति के लिए कवि ने प्रकृति का आश्रय लिया हैं। जिसमें प्रकृति का मादक मोहक और मानवीकृत रुप है।

' कामिनी-सी अब लिपटकर सो गई हैं
रात यह हमेंत की
दीप-तन बन उष्म करने
सेज अपने कन्त को
नयन लालिम स्नेह दीपित
भुज मिलन तन गंध सुरभित
उस नुकीले वक्ष की
वह छुवन, उकसन, चुभन अलीसत
चाँदनी होगी न तपसिनि
दिन बना होगा न योगी
कामिनी-सी अब लिपटकर सो गई हैं
रात यह हेमंत की।' 32

'नाश और निर्माण' में भी तना उनकी असंख्य कविताएँ ऐसी हैं 'शाम की धूप', 'धूप का उन', 'ढाकवनी', 'सावन की रात', 'बरसात रात', लाल गुलाबोंकी श्याम', 'रात का हेअर पिन', 'गरमी की श्याम', 'नयी पहचान और पिनारे', 'वाटिका' आदि महत्वपूर्ण हैं। इनमें प्रकृति के कोमल सुकुमार पक्ष का अंकन नवीन शिल्पमें किया गया हैं।

धुले मुख-सी धूप यह गृहिणी सरीखी
मन्द पगधर आ गयी हैं
चाय की लघु टेबिलोंपर
कभी बनती केतली की
प्यालियों की भाप मीठी
कभी बनती स्वयं ही
रसधार ताजे दूध की
या ढाल कर निज प्यार

वह हर वस्तु की बनती समस्त मिठास
अंधरोंपर पिया के।' 33

तो यहाँ मिलन के क्षणों की लज्जा और तरुतिमा साकार हो उठी हैं। जैसे -

'घन मतवाले कागज काले
जैसे लम्बे बाल
सोंधी धरा गंध सी जिनकी
सुधि करती बेहाल
मिलन रात जो तन पर करते छॉह सी
धरा कण्ठ जब इंद डालता बॉह सी
इंद-धरा के नयन अधर भुज
वक्ष मिलन का मास
बहुत दिनों के बाद मिले
अलिंगन का उल्लास।' 34

'मंजीर' की माँ कविता में संध्याकालिन आकर्षक चित्रण के साथ ही ममताभरी मार्मिकता सजीव हो उठी हैं।

गोधुली में धूल भरी जब। वन से चरकर गाये आती
दूर मंदिरों में संझा की। साँझ आरती भी बन जाती
दीप जलाकर तुम तुलसीपर। गोदी में ले हमें सुलाती
नींद बुलाने की थप की दे। नींद भरी तुम लोरी गाती
थके हुअें हम लग कंधेसे। सोते आँचल ओठ तुम्हारे 35

कहने का तात्पर्य यह है कि गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में जो सौंदर्य बोध विकसित हुआ हैं। वह उनकी रोमानी भावना और नयी कविता के सौंदर्य बोध को शब्दोंमें बाँधकर पाठक को अभिभूत कर देता है। यह सौंदर्य न केवल गंधित, मदिर और रंगीन हैं, तो इसमें कवि मानस में लहराती भावनाओं का तीव्र आवेग भी है। और कवि मन की सशक्ति भी हैं।

वैयक्तिकता

वैयक्तिक चेतना नयी कविता की एक अभिव्यक्ति हैं। आज का नया कवि अधिकाधिक आत्मनिष्ठ एवं आत्मकेंद्रित होकर ही अपने मनोभावों की अभिव्यंजना करता हैं, क्योंकि वह अपनी काव्यसाधना में अंर्तमुखी अधिक हो गया है। तथा नितांत वैयक्तिक क्षणोंमें भोगे हुए जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियाँ ही उसके काव्य का मूल आधार बन गई हैं। इसी कारण कवि माथुर में भी वैयक्तिक भावनाओं का चित्रण बहुलता के साथ हुआ हैं -

मैं शुरु हुआ मिटने की, सीमा-रेखापर
रोने में था किंतु गीतों मेरा अंत हुआ।
मैं एक पूर्णता के पथ का कच्च निशान
अपनी अपूर्णता में पूरन
मैं एक अधूरी कथा
मैं अधिकारी ना-होनेवाली बातों का
मैं अनजाना, मैं हूँ अपूर्ण।' 36

इतना ही नहीं प्रेमाभिव्यक्ति में भी माथुरजी किसी अन्य व्यक्ति का रोमांस, प्रणय या प्रेमानुभूति का चित्रण करना अच्छा नहीं समझता। अपने निजी जीवन को बनाकर वैयक्तिक अनुभूति को इस तरह व्यक्त करता है -

'उन गोरी कलाइयों में जो तुम पहिने थी
रंग भरी उस मिलन रातमें
मैं वैसा का वैसा ही
रह गया सोचता
पिछली बातें
निकल गयी सपने जैसी वे राते।' 37

वैयक्तिक अनुभूति का दूसरा चित्र -

'जला क्या दीपक सारी रात
निशा का-सा पलकों पर चिंह
जागती नींद नयन में प्रात
सखी, लगता ऐसा हैं आज
रोज से जल्दी हुआ प्रभात।' 33

तथा दूसरी ओर प्रेम के स्थानपर उसे सदैव निराशा ही हाथ लगती हैं। उसका मन विरह की ज्वाला से सदैव दग्ध रहा है।

'प्यार बडा निष्ठुर था मेरा
कितने मरु तपते यौवन में
रस बरसानेवाले आकर
विष ही छोड गये जीवन में
जल्द टूटनेवाला तारा देख सकेगा कहा सबेरा।' 39

कवि माथुरजीने वैयक्तिक सुख-दुख की अनुभूतियों को जिस सूक्ष्मता से अंकित किया है। वैसे देखा जाय तो उनकी रचनाओंमें सिर्फ अहंवादी भाव ही प्रायः नही मिलाता। कवि का 'मैं एक का नहीं' समिष्ट का द्योतक हैं। अतः व्यक्ति चेतना की अभिव्यक्ति करता हुआ भी कवि सामाजिक चेतना से अलग नहीं हैं। उनकी व्यक्तिवादी अभिव्यंजना समाज से अलग नहीं है।

युग जीवन की विषम परिस्थितियों द्वारा कवि का व्यक्तित्व बार-बार टकराकर उन परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए बेचैन हैं। किंतु उसका यह प्रयत्न असफल रहता हैं। उदा. -

' इस दुनियामें
जहाँ अब दो तीन वि-मुख दुनिया हैं
मैं बीच में ध्रुवान्तो के टकराता हूँ
परिधियों से बाहर
विभक्त सत्य सा
पछाड खाता हूँ।' 40

गिरिजाकुमार माथुर अहंवादी ही कवि नहीं है तो मानव मात्र के प्रति दया, ममता, सहानुभूति का प्रकटीकरण उनके काव्यमें हमें सर्वत्र मिलता हैं। किंतु माथुरजी इतना अवश्य मानते हैं कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व होना चाहिए। रुढिग्रस्त समाजमें कवि परिस्थितियों के अन्तविरोध को समाप्त करके आनेवाले व्यक्तित्व की स्थापना करना चाहते है। अहं के प्राधान्य के कारण कवि शंका उठाता हैं, प्रश्न करता हैं पूर्व प्रतिष्ठित मूल्यों के प्रति अनास्था प्रकट करता है। किंतु आस्था और जीवन की समग्रता और पूर्णता को पकड नहीं पाता। वह स्वयंको कोसता है, समाज को बुरा-भला कहता हैं। उसकी आस्था सामाजिक मूल्योंसे हटकर आत्मकेंद्रित हो जाती हैं।

फलतः उसकी लेखनीद्वारा यही स्पष्ट होता हैं - 'मैं कुन्ता हूँ, जारन हूँ, लाश हूँ, खंडित हूँ।' आदि माथुरजीने इसी अहंवादी वक्तव्य देने की प्रवृत्ति का विरोध किया हैं।

वक्तव्य देने की जिस प्रवृत्ति का माथुरजीने उपर्युक्त पंक्तियों में विरोध किया है। लगभग इसी प्रकार की कुछ पंक्तियाँ उनके कविता में दिखायी देती हैं।

मैं एक पहाड हूँ
सफेद गोबर का
मैं एक जरखेज रेगिस्तान हूँ
सूखे का
मैं एक मात भी जदी हूँ
भूख और मौत की उल्टियाँ
मैं एक डकारता जंगल हूँ
फटे पेट जनती हुई भीड का
मैं तिहरा समुद्र हूँ
कूडे का।' 4।

ये पक्तियाँ काव्य से सर्वथा असंबध न होकर कवि के विचारों को संप्रेषित करने ही अधिक सहाय्यक सिध्द हुई हैं। कवि का मुख्य उद्देश युगीन विकृतियों और सामाजिक वैषम्य को साकार करना हैं।

समग्र रुपसे यह कहा जाता हैं कि माथुरजी की रचनाओं में वैयक्तिक अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति हुई हैं। जिसमें अहंवादी रुप प्रायः उतना नहीं पाया जाता। उन्होंने अपने सुख-दुख तथा दर्द से अधिक समाज के पीडितों की पीडा अंकित हुई हैं।

राष्ट्रप्रेम (देशातुरभि)

गिरिजाकुमार माथुर की एक दुनिया तो रंगीन, रसीली, कोमल है जिसमें उनके निजी भाव और एकांतिक क्षणोंका चित्रण हैं। तो दूसरी ओर वह है जिसमें कवि अपने देश के प्रति अनुराग से भर उठा हैं। माथुरजी की कही कविताओं में कवि की राष्ट्रीय की और सतत जागरकता और राष्ट्रप्रेम दिखायी देता हैं। माथुरजी की राष्ट्रीयता कही भारत भूमि के चित्रण में, कही देश के नेताओं को दिए गए जागृति के संदेश में कहीं धरती के प्रति आस्था प्रेरित अनुराग के अंकन में, कहीं राष्ट्र की आत्मा बने महापुरुषों के चित्रण में, कहिं 'एशिया के जागरण' गीत में और कहीं देश के नवयुवकों

को बहुत संघर्षोंसे सामना करते हुअे जो आजादी मिली है। और उस आजादी की सुरक्षा के लिए निरंतर जागृति का मंत्र देने में व्यक्त हुई हैं।

इसप्रकार की राष्ट्रीय भाव कविताओं में 'पंद्रह अगस्त 1947', 'ढाकवनी', 'एशिया का जागरण', 'बुध्द', 'विजया दशमी', 'याज्ञवल्क और गार्गी', 'नये साल की साँझ', 'इंदुमति', 'महाप्राण निराला', और 'दो चित्र' आदि प्रमुख कविताएँ है।

देश के लोगोंको अपने देश की आजादी के प्रति सतर्क रहने के लिए संदेश देता हैं -

'आज जीत की रात। पहरुए सावधान रहना
खुले देश के द्वार। अचल दीपक समान रहना
उँची हुई मशाल हमारी। आगे कठिन डगर हैं
शत्रु हट गया। लेकिन उसकी
छायाओं का डर हैं
जनगंगा में ज्वार, लहर तुम प्रवहमान रहना
पहुरुए सावधान रहना।' 42

कवि माथुर के कविताओं में स्वदेशानुराग भी स्थान-स्थानपर बडी सजीवता और स्वाभाविकता के साथ अंकित हुआ है। भारत भूमि का चित्रण करते समय स्वदेशाभिमान इस तरह व्यक्त हुआ हैं -

'वह धरती भी हैं चढी युगों से सूलीपर
हैं खिंची हिमालय-सी बाँहे
दोनों हथेलियाँ जडी हुई
साम्राज्यवाद की मुहर लगी दो कीलोंसे
हैं पर्वत चरण बँधे नीचे
भुख की मुद्रा हैं मौन
किंतु आँखो में आग धधकती हैं
हैं कसे धनुष से वक्र ओठ
पर आँखो में आग्नेय बान खिंचत जाता।' 43

इतना ही नहीं कवि की यह स्वदेशानुराग राष्ट्रिय भावना 'ढाकवनी' कविता में और भी अधिक तीव्रता के साथ मुखरित हुई हैं जहाँ वह कवि यह कामना कर रहा हैं। जैसे -

आईनों से गाँव होते। घर न रहते धूल कूडा
जमन पाता जिंदगी पर। युगों का इतिहास-घूरा
खाद बन जीवन फसल की। लोकमंगल रुप धरता
हरे होते पीत ऊसर। स्वस्थ हो जाती मनुज्ञा
लाल मिट्टी, लाल पत्थर, लाल कंकड, लाल बजरी
फिर खिलेंगे ढाक के बन, फिर उठेगी फाग-कजरी।' 44

ऐसे ही कवि ने स्वदेशप्रेम, राष्ट्रीय भावना को उन महापुरुषों के चित्रण में भी देखा जा सकता हैं, जो भारत की आत्मा हैं। जिनके प्रयत्न और बलिदान से भारत का सिर उँचा हुआ हैं, और जो भारत की अंतरात्मा में रमे हुए हैं। माथुरजी ने बुध्द के प्रति अपनी श्रध्दा, प्रेम और निष्ठा व्यक्त करते हुअे 'बुध्द' नामक कवितामें लिखा हैं -

'फैल गयी थी मिट्टी के अंतर की बाँहि
सत्य और सुन्दरता के अविरल संघों से
स्याम, ब्रम्ह, जापान, चीन, गांधार, मलय तक
दीर्घ विदेशों के अशोक साम्राज्यों उपर
नहीं रहे वे महावंश अब
वे कनिष्क-से शिलादित्य से नाम हजारों
किन्तु तक्षिला, साँची, सारनाथ के मंदिर
वहाँ विश्व जय हुई प्यार के एक घुँट से।' 45

'एशिया जागरण' नामक कविता में माथुरजी का देशप्रेम व्यक्त हुआ है। जहाँ कवि ऐतिहासिक तथ्य और कल्पना का आश्रय लेकर पुकार उठा हैं -

जन अम्बुधि की यह एक लहर आसन्न क्रांति की दूत हुई
लो महाशक्ति युगजीवन की जन-जीवन में संभूत हुई
देशों से उठ आया निनाद अंतिम विराट जनसंगम का
हो एक प्राण, हो एक चरण, हो एक दिशा जनता निकली,
इतिहास सर्य के अश्व मुडे, युग जीवर ने करवट बदली
नयनों में अग्नि शिखाये हैं, मुखपर मानवता का चंदन
जनता! जनार्दन आज बडी करने आजादी का वंदना।' 46

देश के वन खेत, गाँव, नगर, पहाड, मौसम आदि देश में रहते हुए बहुत अच्छा और मन लुभावनेवाले जो होता है, लेकिन अपनी जन्मभूमि की याद उस समय बहुत आती हैं, जब देश छोडकर विदेश चला जाता हैं। उदा.

'देश काल तज कर मैं आया
भूमि सिन्धु के पास
उस मिट्टी का परस छूट गया
सभी पराया सभी अचींहा
रंग हजारों पर मन सूना
नभ-भवनों मे याद आ रहे
वे कच्चे घर द्वार।' 47

तो दूसरी तरफ देश के जन-जीवन की वास्तविकता का चित्रण माथुरजी के काव्य में व्यंगात्मक शैली में भी हुआ हैं। स्वतंत्रता के बादमें देश के जीवनमें जो अनेक प्रकार की विकृतियाँ निर्माण हुई और पनपी उसका यथार्थ और स्वाभाविक सीधा चित्रण व्यंगात्मक शैलीमें भी हुआ हैं। माथुरजी की 'एक अधनंगा आदमी' इस दृष्टिसे महत्वपूर्ण कविता हैं।

इस कविता में देश के जीवन का वास्तविक चित्रण है। उँचे-उँचे आदर्शों का बरवान करनेवाले लोग भ्रष्ट हो गये है। धोखा-धडी और बेईमानी की चलती हैं। दवा के नामपर खटियाँ मिट्टी की गोलियाँ बिकती हैं। सरकारी कार्यालयों में कामचोर कर्मचारी हैं। योग्यता के स्थानपर बडे-बडे लोगों की सिफारिश नौकरी के लिए आधार बन गयी है। प्रतिभा उपेक्षित हो गई हैं, और मूर्खता चालबाज आदि को बढावा मिल रहा है। आदि विकृतियोंपर 'एक अधनंगा आदमी' में व्यंग्य प्रस्तुत किया हैं। जैसे -

'भोंदुओं की यह अपार भीड
कन फुसियों में कहती हैं
यह आदमी हैं खतरनाक
यह आदमी हैं सोचता
फौरन भुनाने में हर किसी
खुशामद में कैश और काईड
मैं चमचों की हैं करामत
दोस्त में जासूस, एक्सपर्ट में ऐयार

मुखियों में गद्दी में - भाल में सभाल में
आपस में लडती रही - पंचायत लगातार।' 48

माथुरजी कहते हैं कि देश की उन्नत तब ही हो सकती है देश की गिरती हुई दशा मानव मूल्योंका पतन और देश के लोगों की आचरण भ्रष्टता नष्ट हो और यह तब हो सकता है जब देश के लिए कुछ लोग आत्म बलिदान करें देश के प्रति प्रेम की भावना अधिक से अधिक बढे।

विश्वबंधुत्व और मानवतावाद

गिरिजाकुमार माथुर अपनी भावुकता प्रेमिलता और रंग रोमांस की प्रवृत्ति के गायक होते हुअे भी प्रगतिशील कवि है। उनकी प्रगतिशीलता का प्रमुख स्वर विश्वबंधुत्व और मानवतावादी भावनाओंसे भरा हुआ है। वैज्ञानिक सुविधाओं के अति प्रसार के कारण आज राष्ट्रोंकी दूरी कम हो गई हैं। हरेक राष्ट्र अपने उत्थान और विकास के लिए दूसरे राष्ट्रों के सहयोग की अपेक्षा करता हैं। इसी सहयोग की भूमिकापर विश्वबंधुत्व और मानवतावादी दृष्टि का प्रसार होता हैं। माथुरजी की अनेक कविताओं में हमें मानवतावादी दृष्टि का प्रसार मिलता हैं। संवेदनशील कवि और कलाकार भी अन्य व्यक्तियों के समान विश्वजनित समस्याओं से प्रभावित होते हैं। अतः उनके काव्य में राष्ट्रीयता की अपेक्षा विश्व कल्याण और विश्वबंधुत्व की भावना के रंग अधिक गहरे दिखायी देते हैं। माथुरजी की अनेक कविताओंमें इसी विश्व मानवतावादी दृष्टि को देखा जा सकता हैं। पूँजीवादी लोगोंके कारण या साम्राज्यवाद के शोषण के कारण जो पीडा, दुख, दैन्य से मान को पीडा, दुख भोगना पडता है। इसीसे माथुरजी खिन्न है। और अपने मानवतावादी दृष्टि के कारण कहता हैं।

'मेरी मानवता पर रखखा। गिरि-सा सत्ता का सिंहासन
मेरी आत्मापर बैठा हैं। विषधर-सा सामन्ती शासन
मेरी छाती पर रखा हुआ। साम्राज्यवाद का रक्त कलश
मेरी धरती पर फैला हैं। मन्वन्तर बनकर मृत्यु दिवस
तेरी जंजीरों में बँधकर। कंकाल हुई मेरी काया।' 49

सदियों चुपचाप अन्याय सहता और जंबुद्वीप आज अंगार बनकर विश्व के समक्ष आया है। भारत, ब्रम्ह, फिलिस्तान आदि सभी छोटे बडे देश जिनकी स्वतंत्रता की पवित्र भावना मर गयी थी, वे पुनः नवीन जीवन की मशाल लेकर शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए आगे बढे है। जैसे -

'अंगार बन गया आदिपूर्व
सदियों का धुँधला जुबंद्वीप
ये परम पुरातन महादेश

आये मशाल लेकर नवीन
जब चीन, मलय नवहिंद चीन
ब्रम्हा, भारत, द्रुठ फिलिस्तान।' 50

पश्चिमी साम्राज्यवाद ने अपने कृत्योंसे एशिया की सभ्यता और संस्कृति को मिटाने का बहुत प्रयत्न किया। किंतु एशिया का प्रत्येक घर, नगर, तथा ग्राम में संघर्षता इतनी बढ गयी कि पराधीन राष्ट्रों के मनमें अपने संस्कृतियों प्रति अभिमान जाग उठा। अपने आदर्श राजाओं और बुध्द, ईसा आदि महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर एशिया के प्रत्येक जन के मन में क्रांति की भावना जाग उठी। स्वतंत्रता के लेए सामुहिक संकल्प किया गया। सदियों से सोये हुअे एशिया में फिर से मुक्ति की चेतना भर आयी एशिया का कण-कण नवीन स्फूर्तिसे भर गया।

'मुड गये समय के चपल चरण
आया कृतान्त बन मुक्तिकाल
मिट्टी का हर कन सुलग उठा
जल उठी एशिया की मशाल।' 51

अंर्तराष्ट्रीय जनजागरण से चीन से लेकर पाताल तक का सारा भूगोल एक संस्कृतिमें बँधा गया। पूर्वा और पश्चिमी राष्ट्रों के बीच की जो द्वेष भावना थी वह सहयोग और शांति में बदल गयी।

चीन से पाताल तक भूगोल सारा
एक संस्कृति डोर में हैं बाँध डाला।' 52

माथुरजीने अंर्तराष्ट्रीय जनजागरण के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना को भी जगाने का प्रयास किया हैं। वेदेशी शासन के अत्याचार और शोषण के विरुध्द संघर्ष करनेवालों को कवि और भी प्रोत्साहित करता हैं। माथुरजी ने अपनी लेखनी द्वारा हर एक भारतीय के मन में परतंत्र के विरोधी भावना और स्वतंत्रता का जोश भर देता है, जिससे भारतीय अत्याचार और शोषण के सामने कभी न झुके। उनकी 'बरफ का चिराग' ऐसी कविता है, जिसमें प्रत्येक भारतीय के मनमें संघर्ष की भावना को और भी भडका दिया हैं और अपने स्वराज्य के प्रति दृढ रहने की शक्ति दी है। कवि के शब्दोंमें -

बनकर शमशीर उठी जनता
गिरि में निमग्न ननु की आत्मा
जब उठ आयी कर सिंहनाद
पथ की रज लेने उतर पडा सिंहासन से सामंतवाद

UNIVERSITY ... PUR

हिम के सफेद दीपक की लौ अब हुई लाल
सदियों से जमी हुई मिट्टी बन गयी ज्वाल।' 53

तो '15 अगस्त' नामक कविता में परतंत्र के बाद मिलनेवाला स्वतंत्र की स्वच्छंदता और विदेशी शासन से मुक्ति का आनंद चित्रित किया है। इस आनंद के साथ ही माथुरजी सावधान रहना का सलाह देते हैं, क्योंकि दुखों की छाया अभी भी पूर्णतः नष्ट नहीं हुई हैं। इसलिए कवि कहता है -

अभी शेष हैं पूरी होना। जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पाया दुख की, विगत साँवली कौर
आगे कठिन डगर है। शत्रु हट गया लेकिन उसकी
छायाओंका डर है।
शोषण से मृत हैं समाज। कमजोर हमारा घर है।
किंतु आ रही नयी जिंदगी। यह विश्वास अमर हैं। 54

माथुरजीने देश के उन वीरों के प्रति भी श्रध्दांजलि अर्पित करते है जिन्होंने राष्ट्र तथा मानवता की उन्नतिमें अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था। उनके वीरोचित कार्योंका गौरवगान किया है। किंतु यह गौरवगान पारंपारिक प्रशास्तिगान से भिन्न है। इनमें नवयुग के निर्माण का स्वर प्रमुख है। इस दृष्टि से 'धुप के धान' की 'सायंकाल', और चरित्र की केसर' कविताएँ प्रमुख है। 'सायंकाल' कविता गांधीर्जी के निधनपर लिखी गई हैं तो 'चरित्र केसर' गांधी दिवसपर लिखी गई है। युगपुरुष का गौरवगान करते हुए माथुरजी कहते हैं - धरती सदियों से पापकी जंजीरों में कसी हुई थी, मानव के अत्याचारों से बध्द ईसा जैसे महापुरुष भी नहीं छुटे उन्हें भी अत्याचार सहन करना पडा। महात्मा गांधीजीने अपने अहिंसा तत्वके द्वारा समाज का हृदयपरिवर्तन करके धरतीमाता पर जो अत्याचार और लहू बहता था, उसे नष्ट कर दिया। उन्होंने मानव जाति को हिंसा का नहीं तो अहिंसा का पाठ पढाया। वैर-वैमनस्य, गुंडागर्दी के स्थानपर भाईचारा और समस्त मानव के प्रति सद्भावना को बढावा दिया। कवि के शब्दोंमें -

'रुग्ण धरापर जमी हुई थी
सदियाँ बन प्राचीर
मानवता पर कसी युगोंसे
पापों की जंजीर
इसा बुध्द खडे शमशीर। तुमने धरती के माथेसे
पोंछी रक्त लकिर, ले विराट आधार

सहसा विष के दीप बुझ गयें। बुझे गरम तूफान
भस्म हुआ तम, कर प्रकाश की रक्त अग्निपान।' 55

गांधीजी ने तप में रची हुई अपनी हड्डियोंसे (जैसे दधीची ने वृत्रासुर को नष्ट करने के लिए योग के तप में अपनी हड्डियों का शस्त्र बनाकर उसका नाश किया) नवयुग के निर्माण के लिए वज्र तैयार किया, जिससे मानव हृदय से पशुता हिंसा और क्रुरता नष्ट हो गयी। उनका हृदय नाश की अपेक्षा निर्माण की ओर लग गया था। उन्होंने पशुता के स्थानपर मानवता की प्रतिष्ठा की परस्पर घृणा और विद्वेष हिंसा आदि के स्थानपर उन श्रेष्ठ भावों सद्भावना के विश्वबंधुत्व, विश्वप्रेम के बीज बोये जिनसे मनुष्य स्वयं ईश्वर बन सकता है। एक श्रेष्ठ मानव बन सकता है। उदा. -

'तू बोये जो भी भाव बीज
वे सदियों तक उगते जायें
दुख के दानव ग्रह बुझें सकल
सामाजिक ज्वाला राख बनें
इन्सान बने खुद ही ईश्वर
मानवता उजला पाख बने।' 56

गिरिजाकुमार माथुर के काव्य का मूलस्वर मानवतावादी हैं। उन्होंने अपने काव्य में मानव को उसकी संपूर्ण दुर्बलताओं और सबलताओं के साथ प्रस्तु किया है। माथुर के काव्य में मानव मात्र के सर्वांगीण विकास के आशा का चित्रण है। समाज के नीचतम, दलितों, पीडितों, शोषितों के प्रति कवि की नच्ची सहानुभूति व्यक्त हुई हैं। और शोषकों के नाश की उन्होंने कामना की हैं। मानवपर होनेवाले अत्याचार युध्दोंमें होनेवाला मृत्युकांड का कविने जैसा विरोध किया हैं, वैसे चारों तरफ फैले हुए अंधकार में मानव के विकास की अपेक्षा भी व्यक्त की है। ऐसे अत्याचारों को वर्षोंसे सहते रहनेपर भी माथुरजी को विश्वास हैं कि भविष्य में ऐसे शुभ दिन आयेंगे जब समाज के दुख दर्द अब समाप्त हो जायेंगे और मानव के विकास का मार्ग सरल हो जायेगा। मानव के विकास मार्गपर बाधा डालनेवाले साम्राज्यवादी व्यवस्थाको कविने विरोध किया हैं। तथा मानव-मानव के बीच में पनपनेवाली सहयोग भावना विश्व-बंधुत्व की भावना का समर्थन किया हैं। कविने उस मानवता का दिल खोलकर सहर्ष अभिनंदन किया है, जो सदियों की तिमिर को पार कर नए विकास के लिए झटपटा हीं हैं। जैसे -

'आदम का पुत्र बहुत
भटका अँधेरों में

चंगेजी न्यायों के
किंतु धरा मृत्युंजय
स्वर्ग नया पा गई
सदियों के तिमिरपार
मानवता आ गई।' 57

'धूप के धान' की 'भोर एक लैंड स्केप' नामक कवितामें प्रातःकालीन दृश्य के माध्यम से संक्रांतकालीन अनास्था अंधकार और निराश का अंत और आस्था उल्लास और जनजागरण की सूचना दी है। ऐसे स्थलोंपर प्रकृति भी सामाजिक कल्याण की भावना से ओतप्रोत भरी दिखायी देती है प्रकृति के माध्यम से कवि की मानव के प्रति नए विकास की भावना दिखायी देती हैं।

'तामस के शासन का प्रतीक
बुझता हैं वह अंतिम प्रदीप
अंतिम तारा
तम गढके ढहते भारी कोट कंगूरों से
यह प्रथम प्रदोष निमिष हैं नये उजेले का
जीवन के नये जागरण का।' 58

मानव की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करते हुए कवि ने उसकी बाहों को शक्ति का प्रतीक माना हैं। जिसके द्वारा वह सामाजिक ढाँचे को अपनी इच्छानुसार बदल सकता हैं। अपने सपनों को साकार कर कठोर परिश्रम से आकाश के स्वर्ग को धरतीपर ला सकता है।

'ये शक्तिवान मेहनत की बाँहों के प्रतीक
उन रुखे भारी हाथों के गतिमान चित्र
गढते जाते हैं जो सामाजिक मूरत को
जीवन की मिट्टी को सँवार
सच्चे कर देते है सपने
लेते है स्वर्ग उतार विचारों के नभ सें।' 59

मानव अपने जीवन में संघर्षों से जूझकर कठिनाईयों के पार करके अपना मार्ग स्वयं बना लेता हैं। मानव के इस कठोर परिश्रम के कारण मनु की धरती अजरामर है। जैसे कवि कहते हैं -

किंतु नहीं

मिट सका कभी न भविष्य मनुज का
अणु का नाग नाथनेवाले महामनुज का
अणु की अग्नि - गरज में भी
यह ध्वनि उठती हैं
जीवन में जीने का बल हैं
मनु की धरती अजर अमर हैं। 60

माथुरजी की आस्था प्रेरित मानवतावाद जागृति और समृध्दि की लहर को घर-घर में देखना चाहता है। जैसे -

'फिर भी आजतक इनसान भूखा। इसलिए जलते रहेंगे
उस समय तक आग को बुझने न देंगे
सर्दियों की धूप का मृदु उन। फैले गान घर घर ।' 61

यथार्थ बोध और सामाजिक संदर्भ

गिरिजाकुमार माथुर की प्रगतिशील कविताओंमें यथार्थ बोध और सामाजिक दृष्टिकोण दिखायी देता है। माथुरजी ने जीवन को नजदीकी से और बारीक नजर से देखा है। वर्तमान समाज की आर्थिक, सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों के वास्तविक चित्र कवि की रचनाओंमें मिलते हैं। ग्रामीण और शहरी परिवेश के वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करते हुअे कविनें किसानों, मजदूरों और मध्यवर्गीय मानवों की जिंदगी को उसकी असली जिंदगी में चित्रित किया हैं। अभावों, असफलताओं, संघर्षो और कुंठाओं के बीच घिसटती जिंदगीके वास्तविक चित्र 'धूप के धान', 'शिला पंख चमकीले', और 'भीतर नदी की यात्रा' तक मिलते हैं। यथार्थ बोध और सामाजिक संदर्भो के चित्रण 'नाश और निर्माण' काव्यसंग्रह से हो गया है। उसमें मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थता का चित्रण पूरी विवशता, अभावग्रस्त तथा विषमता का चित्रण किया है।

'नाश और निर्माण' की 'मशीन की पूर्जा' नामक कविता इस दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं। इस कवितामें एक और उच्च वैभव का चित्रण तो दूसरी ओर अल्प वेतनवाले क्लर्क की दिनचर्या का चित्रण है, जो बहुत ही स्वाभाविक बन पडा हैं। जो क्लर्क सर्दी और गरमी की परवाह किए बिना सुबह यंत्रवत उठता है, फटे कपडोंसे कडकडी सरदी का सामना करता हुआ, बगलमें गोटी फायले दबाए सडकपर चला जाता है। जिंदगी की मिठास और मोहकता उस क्लर्क के लिए नष्ट हो गई हैं।

जीवन मशीन की तरह निर्जीव और भावहीन हो गया है। उदा.

'कुहरा भरा भोर जाडोंका
शीत हवा में ठंडे सात बजे हैं
ठिठुरन से सूरज की गरमी जमी हुई हैं
सारा नगर लिहाकों में सिकुडा सोता हैं
पर वह मजबूरी से कंपता उठ आया हैं
रफू किया उसका वह स्वेटर
तीन सर्दियाँ देख चुका हैं।
उसका जीवन जीवनहीन मशीन बन गया
जाडों के दिन की मिठास
अब जहर हुई हैं।' 62

कवि यहाँ विषमता दिखाना चाहता है। एक ओर सुखी अमीर लोग तो दूसरी ओर एक महत्वहीन प्राणी की तरह क्लर्क की अर्थहीन जिंदगी। जिसके जीवनमें प्यार के उच्च आदर्श समाप्त हो गए हैं। आर्थिक दरिद्रता ने उसे क्लर्क को स्वार्थमय बना दिया है। अब उसके मन में विचारों की उथल-पुथल नहीं हैं।

'उसके मन में अब कुछ भाव विचार नहीं है
प्यार मिट चुका
और सभी आदर्शों का बलिदान हुआ हैं
अंधी कर दी गई आत्मा की भी आँखे
उसका भी तो फूल राह में कुचल गया हैं।' 63

माथुरजी ने जीवन को अति निकटतासे भोगा है, देखा हैं, उन्हें मालूम हैं कि विचारों के संघर्ष की अपेक्षा बाह्य संघर्ष अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। जीवन से मिले हुअे कटु अनुभव से कवि ने यह अनुभव किया हैं कि आज के युगमें पैसा ही सर्वश्रेष्ठ है, प्रभावशाली है। जहाँ अपार वैभव और ऐश्वर्य हैं, वहाँ जीवन के सुख-साधन होते है। दिखावट का ही क्यों न हो प्यार फूलता-फलता हैं। यह सब पैसों की जादू है। माथुरजी अनेक उदाहरण देकर अमीरी और गरीबी के बीच में जो आर्थिक खाई है, विषमता हैं उसे दिखाना चाहते हैं। उदा. कवि के शब्दोंमें -

'बंगला, मोटर, कोच रेडियो
रेशम की वह चमचम साडी

बेफिक्री से जिसका छोर लहरता धीरे
चाँदी की कीमतपर होती सभी कलाएँ
प्यार और गीत भी पलते।' 64

आर्थिक विषमता का और एक उदाहरण कविने अपनी लेखणी के द्वारा यह दिखाया है कि उच्चवर्ग (पूँजी पति) के लोगोंके पास अपार खाद्य सामग्री है जिन्हें खाने के लिए उनके परिवार में उतने लोग नहीं होते तो दूसरी ओर फुटपाथोंपर लोग भूख के कारण अन्न न मिलने के कारण तडप-तडपकर मर रहें है। उनके पास दो वक्त की रोटी भी खाने के लिए नहीं मिलती।

'उस खिडकी के रेशमी पर्दे में से आती
ड्रेस-बूट की गंध साडियों की मृदु सरसर
चम्मच-प्लेटों की हल्की मीठी टनकार
और मेजपर का वह दैनिक जिसकी खुशी लौसी उठकर
अविरल दुहराती जाती है, कलकत्ते के फुटपाथोंपर
दो सौं भूखे और मर गए।' 65

मध्यमवर्गीय सरकारी कर्मचारियों के अभावमय जीवन का एक अन्य चित्र कवि माथुरजी ने 'शाम की धूप' कविता में चित्रित किया है। कम वेतन पानेवाले लोगोंकी आर्थिक स्थिति बहुत जर्जर रहतीं हैं। वे अपनी नीजी आवश्यकतायें भी ठीक तरहसे पूरा नहीं कर सकते। उन्हें अपने जीवन जीते वक्त पग-पग पर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। मध्यमवर्गीय लोगोंका जीवन यंत्र की तरह निर्जीव बन गया है। जिसमें अभावों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। सारा दिन दफतरमें काम करनें के बादी भी जब वे शाम को घर वापर आते हैं। तब भी फायले उनका पीछा नहीं छोडती। साइकिलों के कैरियर तथा टोकरियोंमें मौसमी फल-फूल तथा अन्य चीजों के स्थानपर कभी न नष्ट होनेवाली फाइलों का ढेर लगा रहता है। जैसे -

'कैरियर, टोकरी या हैण्डिल में
कुछ के खाली कटोरदान बँधे
कुछ में हैं फायलें हर छिन भूखी
जो न कभी खत्म हुई दफ्तर में
हैं जरा कम ही टोकरी ऐसी
जिनमें आते हैं मौसमी फल-फूल।' 66

जीवन कितना क्लेशमय और संघर्षमय अभावमय है इसका चित्रण कवि माथुरजी नें वास्तविक

किया है - जीवन इतना नाना क्लेशोंसे भरा-पूरा हैं कि दूध, घी आदि स्वास्थवर्धन वस्तुओं की बातें तो दूर चीनी, दाल, नमक आदि आवश्यक वस्तुएँ भी स्वप्नगत हो गई है।

'दूध घी का यहाँ पै चर्चा क्या
जब न चीनी न गुड न दाल - नमक
हो गया स्वप्न किरासिन का तेल
इनका अब ख्याल हैं, इतिहास की बात।' 67

'नाश और निर्माण' की 'टाइफाइड' नामक कविता में चित्रित क्लेश और मानसिक तनाव मध्यवर्ग में ही है। बाह्य और आंतरिक मानसिक तनाव के कारण सामान्य लोगोंका जीवन 'क्रानिक मरीज' की तरह हो गया हैं, जो लाख कोशिश करनेपर भी जहाँ हैं वहाँ से आगे नहीं बढता तो वह और भी खाई में धकेला जा रहा हैं। अपने सीमित संसार में तनाव के कारण बेचैनी, आशंका तथा अनास्था ही हैं। अतः वह विश्वासहीन बन गया हैं।

'अब घबराहट
बैचेनी, बेरियत, आशंका, आकुलता, चिंता अनास्था
अपने में लीन
किंतु आत्मविश्वास हीन
तबियत हैं काँटेपर
दोष सभी रखता हैं
किस्मत के माथेपर।' 68

दलित, शोषित, क्लर्क, मजदूर, किसान कठिन से कठिन परिश्रम करके भी दो वक्त का भोजन ठीक नहीं मिल जाता। इसका कारण यहीं हैं कि शक्तिसंपन्न ऐसे हमारे ही घर के लोग उनका शोषण कर रहें हैं। ऐसे शोषण से हमारा समाज ही नहीं राष्ट्र भी कमजोर और निष्क्रिय बन जाता हैं। उदा.

'शोषण से मृत हैं समाज
कमजोर हमारा घर हैं। 69

आर्थिक विषमता के कारण मानव स्वार्थी और लालची बन गया हैं। मनुष्य ही मानव-मानवमें अमीर-गरीब की दीवार भर देता है। धनवान की दृष्टि से गरीब यह एक कीटाणू जैसा महत्वहीन हैं उसका कोई मूल्य तथा महत्व नहीं हैं। जिंदगीभर भूख, बिमारी सहते-सहते वह अपना मनुष्यत्व मान-अपमान भी भूल जाता है। उदा.

'भूख बीमारी, गरीबी गंदगी
कौडियों के मोल बिकती जिंदगी
आदमी का मिट गया सम्मान हैं
मनुजता का अब न गरिमा गान हैं।' 70

वर्ग-विषमता की ओर लक्ष्य करते हुअे कवि कहता हैं, अमीरी और गरीबी ही विषम चक्कीमें मानव आज बुरी तरह पिस रहा हैं, उसके कठिनाईयों का कोई अंत नहीं। उसका जीवन निरुद्देश और इसका कारण है हमारी अर्थव्यवस्था। जैसे कवि के शब्दोंमें -

'दो दुनियाँ के विषय शून्यमें
बना त्रिशंकु आज का जीवन
इनकी मंजिल हैं दिन भर का संघर्ष
और चाँदी के टुकडे
या शरीर आत्मा की बिक्री।' 7।

माथुरजीने जहाँ नैराश्य अभावग्रस्त का चित्रण किया है, वहीं उन्होंने आशा भी व्यक्त की है। जीवन की विषम परिस्थिति को मानव संघर्षद्वारा बदल सकता है। अपने कठोर परिश्रमद्वारा फिर जीवन को सुखी और समृध्द बना सकता हैं। उदा.

'ज्वालामुखी के दीप-सा
संघर्ष का यह लोक हैं
हिलती हुई धरती यहाँ
हिलती हुए आधार हैं
संघर्ष का अणुबम यहाँ जाँचा जाय।' 72

माथुरजी कोरे आदर्शोंमें नहीं जो अपने बाहों के शक्तिपर विश्वास रखता है। उसका दृढ विश्वास है कि वही मनुष्य अपना उध्दार कर सकता है, जो अपने बाहों के बलपर सतत कर्म करता रहता हैं।

माथुरजी को विश्वास हैं गति का काल-चक्र पूँजीवादी तथा सामंतवादी सत्ता का नाश करके ही रहेगा। कवि आस्था के स्वर में कहता है कि एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा की संसार में दुख की, शोषण की सत्ता नष्ट हो जायेगी। ऐसे नये समाज की रचना हो जायेगी जिस समाज में शोषण, दोहन, अन्याय, असमानता समाप्त होकर एक स्वथ सुंदर मानवीय समाज की रचना बन सकेगी। माथुरजी की 'पहिये' यह कविता सामाजिक परिवर्तन में आस्था और प्रगतिशील चेतना की संवाहक हैं।

उदा.

'ये घूम रहें हैं जीवन के पहिये महान
घूमा करते विश्रांतिहीन
ये शक्तिवान मेहनत की बाँहोके प्रतीक
उन रुखे भारी हाथों के गतिमान चित्र
गढते जाते हैं जो सामाजिक मूरत को
जीवन की मिट्टी को सँवार
सच्चे कर देते हैं सपने
लेते हैं स्वर्ग उतार विचारों से नभसे
पर परिवर्तन का तेज चक्र बढता आगे
हैं धार काटती नाग पाश
बस इसलिये होगा विनाश
मानव का मानवपर, दुख दोहन, अनाचार
वह पास लिये आता हैं मनुज समाज नया
जब दुख की सत्ता मर जायेगी।' 73

मानव जीवनमें दुखों और कठिनाइयों से लडता हुआ जुझता हुआ, अपने उद्देश की ओर बढता रहता है। जीवन का वास्तविक सुख चैन वही मिलता हैं जो कटुतासे खुलकर संघर्ष करता हैं। कवि के शब्दोंमें -

'क्योंकि हमने भजबल से
अपना मार्ग प्रशस्त बनाया
दुखों से कर युध्द
परिस्थितियों से लडकर
और जूझकर भारी से भारी अंधड से
हमने कटुता से खुलकर संघर्ष किया हैं।' 74

गिन्जिाकुमार माथुरजी समाज में आर्थिक समता लाने के लिए समाज को सुख संपन्न और वैभवशाली बनाने के लिए क्रांति या विध्वंस का मार्ग नहीं बताया। उन्होंने नये समाज की निर्मिती को महत्व दिया है। कवि कहते हैं अगर मानव के पास जबरदस्त इच्छाशक्ति हैं तो वह अपने दृढसंकल्प और कठोर परिश्रमद्वारा धरती को फिरसे हरा-भारा और समृध्द बना सकता हैं। सस्य श्यामला भारतभूमि फिरसे सोना उगल सकती है। उदा.

'फिरसे धरती को फुलल ओक बनाओं
फसलों की पकी गंध बनकर तुम छाओं
निर्माण बीज युग के पतझर से लेकर
तुम नवयुग का रंगोत्सव नया रचाओं।' 75

माथुरजी आगे कहते हैं कि किसानों और मजदूरों की लगन और मेहनत से नया समाज निर्माण होगा। कवि कामना करता है कि देशमें अच्छी फसल हो, कारखानोंमें अधिक उत्पादन हो जिससे घर ग्राम श्रृदि-सिद्धि से भर जायेंगे, नगर वैभवशाली हो जायेंगे जब धरती सोना उगलने लेगेगी, उस वक्त हर भारतवासी का जीवन सुखी होगा, देश से दरिद्रता का नाश होगा। धरती के वैभव और समृध्दी को देखकर स्वर्ग भी तरसेगा।

उदा.

'धूप उगे, फसले फूले
अक्षय सुख का भांडार हो
ऋध्दि-सिध्दि से भरे ग्राम
नगरों में श्री सुख विखरे
मेरी इस सांवर धरती पर
सोना चाँदी बरसे।' 76

कवि को विश्वास हैं कि मनुष्य का सच्चा सुख तो उसकी मेहनत में हैं। अपना खून-पसीना एक करके ही वह अपने सुख का मार्ग बना सकता हैं। नयी पीढी आज के दुख दर्द और संघर्ष को मजबूर छातीपर हीं झेल सकेगा।

'असल सुख के लिए मेहनत
पसीने से बनेगा पथ
इसी से जिंदगी को तिक्त
कडवी, कटीली अनुभूति
मनमें और पचने दो
हमारे दुख दर्द संघर्ष को
मजबूत छातीपर
नई पीढी को संवरने दो।' 77

माथुरजी के काव्यमें सर्वत्र हमें आस्था और विश्वास के स्वर प्रमुख रुपसे मिलते हैं। अभावग्रस्त, चिंताग्रस्त जीवन का चित्रण करने के साथ-साथ संघर्ष को कवि ने विशेष महत्व दिया है। कठोर परिश्रम को महत्व देते हुए कवि ने आशा व्यक्त की है कि संघर्ष की आग को हम तब तक नहीं बुझने देंगे, जब तक संघर्ष घर-घरमें न फैल जाय। जैसे -

'उस समय तक आग को बुझने न देंगे
आयगा जब तक न मिट्टी से उजाला
सर्दियों की धूप का मृदु उन
फैलेगा न घर-घर।' 78

इसप्रकार हम देखते हैं कि माथुरजी की प्रगतिशील काव्योंमें सामाजिकता का विशेष आग्रह हैं। यहाँ माथुरजी की दृष्टि अपने व्यक्तिगत सुख-दुख की और न जाकर संपूर्ण समाज का सुख और दुखमें वे एकरुप हो गये है। आज के अभावग्रस्त निराश मानव के प्रति कवि की सहानुभूति हैं। इसी कारण माथुरजीने स्थान-स्थानपर अमीर लोगों और गरीब लोगों तथा मध्यवर्ग व्यक्तियों के जीवन की तुलना की हैं। अंत में वह इस निष्कर्षपर पहुँचा हैं कि अमीरों के शोषणद्वारा ही आज सर्वत्र दिखायी देनेवाली गरीबी और भूखमरी है। इसलिए कवि ने मानव को संघर्ष के लिए समस्त मानव के कल्याण के लिए प्रेरणार दी है। कवि आगे कहते हैं कि मनुष्य अपने कठोर परिश्रमद्वरा उन्नति के मार्ग की ओर जा सकेगा। कवि विफलग्रस्त जीवन के साथ-साथ परिश्रम के कारण जीवनमें आनेवाले भविष्य की कल्पना करता हुआ कहता है कि कठारे परिश्रम के कारण खतोंमें अधिक अन्न उत्पन्न होगा। कारखानों में अधिकाधिक उत्पादन होगा, तभी मानव अपनी और राष्ट्र दानों की उन्नति कर सकेगा। अतः माथुरजी आज की आर्थिक या सामाजिक विषम परिस्थिति को देखकर दुखी नहीं होता तो विश्वास रखता हैं कि आनेवाला भविष्य निम्नवर्ग को सुख समृध्द और वैभवशाली बनायेगा। माथुरजीने अपने काव्यमें मानव को उसके श्रम तथा कार्यक्षमता को विशेष महत्व दिया हैं।

लोकजीवन

गिरेजाकुमार माथुर तो वैसे नगरीय जीवन को चितारनेवाले कवि है। उनके काव्य की मूल संवेदना नगरीय जीवन से संबंधित है, क्योंकि इस जीवन को उन्होंने स्वयं उपभोगा हैं। इसीमें वे पले बडे हुअे और उसी नगरीय वातावरणमें इनके काव्य की प्रतिभा विकसित हुई। लेकिन माथुरजीने शहरी जोवन के साथ-साथ लोकजीवन के भी अनेक चित्र प्रस्तुत किये हैं। अपनी अनेक कविताओंमें उन्होंने ग्राम्यजीवन रेखाएँ हैं। वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज, बोल-चाल, आस्था और विश्वासों

को स्वाभाविकतासे शब्दबध्द किया है। अनेक लोक प्रचलित कथाओं को नया रुप प्रदान किया हैं। इस दृष्टिसे 'दियाघरी' और 'ढाकवनी' कवताएँ प्रमुख है। मेरे 'लघु एकान्त ग्राम में' विध्या के उँचे टिलों तथा झाड-झंखाड से घिरे अपने छोटेसे ग्राम की ओर संकेत करते हुअे कवि माथुरजीने वहाँ के छोटे से सप्ताहा कि बझार (हाट) के वक्त उस बझार में से चीजे खरीदने के लिए दूर-दूर से बैलगाडियोंमें से आनेवाले नर-नारियों का चित्रण इस प्रकार किया हैं।

'विंध्या के उँचे नीचे टीलों से घिरे देशमें आकर
वन को गया और भी श्यामल
उसी झाड-झंखाड बीच
मेरा छोटा गाँव बसा हैं
वही हरेक शनीचर के दिन
हाट लगा करती हैं
दूर-दूर के गाँवो के नर नारी आते
अपनी बैलगाडियाँ लेकर।' 79

तो 'ढाकवनी' कविता में प्रकृति का व्यापक रुप से चित्रण करने उपरांत माथुरजीने पास के एक ग्राम के रहन-सहन तथा वहाँ के लोग अपने प्रतिदिन उपयोग में लानेवाले वस्तुओं का इस रुपमें वर्णन करता है कि गाँव में रहनेवाले लागों के निम्न स्तरीय जीवन पूरी सच्चाई के साथ प्रकट हो गया हैं।

लाल पत्थर लाल मिट्टी। लाल कंकड लाल बजरी
लाल फूले ढाक के बना। डाँग गाती फाग कजरी
ताल की हैं पार उँची। उतर गलियारा गया हैं
नीम, कंजी, इमलियोंमें निकल बंजारा गया हैं।' 80

तो यहाँ ग्राम का कितना स्वाभाविक वर्णन हो गया जिसके चित्रण से हमारे नजरों के सामने ग्राम का जैसे के जैसा रुप आ खडा हो जाता हैं। उदा.

'बीच पेडों की करन में
हैं पडे दो चार छप्पर
हाँडियाँ, मचिया कठौते
लठ्ठ, गूदड, बैल, बक्शर
राख, गोबर, चरी आँगन

लेज, रस्सी हल, कुल्हाडी
सूत की मोटी फतोई
चका, हँसियाँ और गाडी।' 8।

भारतीय ग्राम प्राकृतिक वैभव वरदान है किंतु वहाँ रहनेवाले लोग गरीब है। दिनभर बहुत परिश्रम करनेपर भी ग्रामवासियों को दो वक्त भी भरपेट खाना नहीं मिलता। भूख की मनहूस छाया सदैव उनके जीवनपर छाई रहती है। जैसे कवि के शब्दोंमें -

'भूख की मनहूस छाया
जब कि भोजन सामने हो
आदमी हो बीकरे-सा
जब कि साधन सामने हो
धन वनस्पति भरे जंगल
और यह जीवन भिखारी
शाप नल का घूमता हैं
मोथरे हैं हल कुल्हाडी।' 82

'दियाधरी' कवितामें मालव-प्लेटों की उत्तरी सीमा के पर स्थित गाँवमें प्रचलित प्राचीन लोककथा को माथुरजीने नये ढंगमें प्रस्तुत किया है। माथुरजी के अनुसार - 'हर रात पहाडी की चोटीपर एक दीप जल जाता हैं। गाँववालों का विश्वास हैं कि उसे जिन्न जलाते हैं। इतिहास का सत्य किस प्रकार टूटकर कल्पना और भ्रम बनता हैं और किस प्रकार उसे भविष्य की रचना की ओर उन्मुख किया जाता है।' 83

ग्रामीण लोगोंके अंधविश्वास का चित्रण करते हुअे कवि कहता हैं कि गाँव के हर टीले का एक देवता होता हैं। जिसे अज्ञान के कारण वहाँ के लोग सैंकडो वर्षोंसे पूजते आ रहे है। चरवाहे प्रत्येक पत्थर को विक्रमादित्य का सिंहासन मानते हैं। जो भूत-प्रेत का राजा होता है। जैसे -

'हर टीले का एक देव
हर दबी पुरापर चौतरा
हर पाताल-बावडी रमते
राजा, रानी, अप्सरा
चरवाहों का हर पत्थर
सिंहासन विक्रमभान का

रातों होता न्याय

भोर पहरा पडता सुनसान का।' 84

किंतु सच्चाई इन सब बातोंसे बहुत दूर हैं। उनका जीवन अनेक अभावोंसे भरा है।

'मिट्टी के घरकूलोंमें

दुख, रोग, रंज लाचारियाँ।' 85

इसप्रकार देखा जाय तो माथुरजीने अपनी काव्य कृतियोंमें लोकजीवन का चित्रण करने का प्रयास अवश्य किया है। उसमें उन्हें सफलता भी मिली हैं। लेकिन अन्य कवियों के भाँति उनमें व्यापकता, तललीनता, रम्यता, सूक्ष्मता का अभाव दिखायी देता हैं। 'ढाकबनी' और 'दियाधरी' आदि कुछ कविताएँ ही ऐसी है, जिनमें भारतीय ग्राम के जीवन का वहाँ के रहन-सहन, अंधविश्वास, पिछडेपन आदि की झलक भी हमें मिलती हैं। किंतु ऐसे स्थलोंपर वस्तुपरिगणन शैली ही प्रधान हैं। इसका कारण यह है कि लोकजीवन का चित्रांकन करना माथुरजी के काव्य का मुख्य उद्देश नहीं हैं। शहरी परिवेश उनके काव्यमें अधिक दिखायी देती हैं।

प्रकृतिचित्रण

कवि गिरिजाकुमार माथुरजीने प्रकृति को विविध रुपोंमें देखा हैं। विविध प्रकार से प्रकृति के सौंदर्य की सराहना की है। नाना प्रकार के क्रियाव्यापारों मे लीन प्रकृति की गतिविधियों के चित्र अंकित किए हैं। नवीन प्राकृतिक दृश्योंका निर्माण किया है, और विविध प्रकार से प्रकृति के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया हैं।

हम यहाँ स्पष्ट करना चाहते हैं कि प्रकृति की व्यापकता के अंतर्गत मानव एवं प्राकृतिक सुषमा दोनों का भी समावेश होता हैं। माथुरजी को इन दोनों प्रकार के प्रकृति चित्रण में सफलता मिली है। समीक्षक माथुरजी के जन्म स्थान का परिचय देते हुये कहते हैं - 'अशोकनगर (बुंदेलखण्ड) के लाल पत्थर उँचे नीचे ढूह, छोटी बडी टौरियाँ, काली सोंधी मिट्टी, ढाक के बने जंगल, खजूरे के पेडोंसे आवृत्त नदी-नाले, टेढे-मेढे गली गलियारे, उथली-गहरी ताल-तलैयाँ, विविध देवि-देवताओं के छोटे-बडे मंदिर, स्मारक रुपमें निर्मित छतरियाँ, मजार सुनहली संध्याये चाँदनी राते, प्रकृति प्रदन्त ऐसे बुंदेलखण्ड का ही माथुरजी के मनपर काव्यसंस्कार डालने में बडा हाथ रहा हैं। इसलिए कवि माथुर का प्रकृति के प्रति अनुराग स्वाभाविक ही हैं और प्रकृति प्रेम के कारण ही उन्होंने अपनी सभी काव्यकृतियोंमें प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के चित्र खींचे हैं।

माथुरजी का प्रथम काव्यसंग्रह 'मंजीर' के तृतीय पृष्ठ पर जो 'माँ' शीर्षक कविता दी गयी हैं, उसमें प्रकृति का सफल एवं आकर्षक चित्रण किया गया है। जैसे -

'गोधूली में धूल भरी जब
वन से चरकर गाये आती
दूर मन्दिरों में संध्या की
साँझ आरती भी बज जाती
दीप जलाकर तुम तुलसीपर
गोदी में ले हमें सुलाती
नींद बुलाने को थपकी दे
नींद भरी तुम लोरी गाती
थके हुए हम लोग कंधेसे
सोते आँचल ओट तुम्हारे।' 86

'तर सप्तक' के प्रथम संस्करणमें गिरिजाकुमारजी की 'आज हैं केसर रंग रंगे बने', 'रुककर जाती हुई रात', 'चूडी का टुकडा', 'रेडियम की छाया', 'कुतुब के खँडहर', 'पानी भरे बादल', क्वाँर की दोपहरी', भीगा दिन', 'एसोसिएशन', 'विजयादशमी', 'अधूरा गीत', और 'बुध्द' नामक ऐसी बारह कविताएँ संकलित हैं, तथा इन कविताओं के प्रारंभमें कवि माथुरजी का वक्तव्य भी साडे तीन पृष्ठोंमें दिया गया है। अपने वक्तव्य के प्रारंभमें ही कहा हैं - 'कवितामें विषय से अधिक टेकनीक पर ध्यान दिया गया है, विषय की मौलिकता का पक्षपाती होते हुए भी मेरा विश्वास हैं कि टेकनीक के अभाव में कविता अधूरी रह जाती है। इसी कारण चित्र को अधिक स्पष्ट करने के लिए मैं वातावरण के रंग उसमें भरता रहा हूँ।' 87

इसप्रकार 'तार-सप्तक' में संकलित कवि माथुर की कविताओंमें वातावरण का चित्रण प्रमुख रुप में किया गया हैं। केवल वातावरण का चित्रण होते हुए भी वह प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी हो गये हैं।

उदा. 'तार-सप्तक' में संकलित कवि माथुर की 'कुतुब के खंडहर' नामक कविता दर्शनीय हैं।

'सेमल की गरमीली रुई समान
जाडों की धूप खिली लीले आसमान में
झाडी झुरमुटों से उटे लंबे मैदान में
रुखे पतझर भेर जंगल के टीलो पर

काँप कर चलती समीर हेमंत की
जिनसे अब रोज साँझ कुहरा निकलता
प्यासे सपनों की मँडराती हुई छाँह-सा।' 88

'कवँर की दोपहरी' कविता में प्रकृति का चित्रण देखिए -

'क्वार की सूनी दुपहरी
श्वेत गरमीले, रुएँ से बादलोंमें
तेज सूरज निकलता, फिर डूब जाता
घरोंमें सुनसान आलस उँघता हैं
थकी राहें ठहर कर विश्राम करती
नीम-नीचे खेलते कुछ बालकों की
किली-सी आवाज आती।' 89

'मंजीर' में सायंकालीन वातावरण का अत्यंत मनोहर चित्रण कविने 'संध्या' नामक कवितामें किया है।

'करुण संध्या की विदा
साँस का अंतिम सुमन की फैलती हैं मंद होकर
दूब पर गोधुलि बेला भी उतरती आज होकर
श्याम झुरमुट में विरह की
तान झींगुर ने उठाई
गोद तारक चावलौ से साँझ की भर दी निशाने
छूटती सी बाँह वह
अंतिम किरन-सी दी दिखाई
हो रही चलते मिलनमें नयन की नत ज्योति की
दूर के उस ग्राममें
रथ से उडी कुछ धूल चाई।' 90

कवि गिरिजाकुमार माथुरजी के कुछ कविताओंमें अत्याधिक प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी वातावरण हमें दिखायी देता हैं। उदा. 'तार-सप्तक' में संकलित 'रुककर जाती हुई रात' नाम कवितामें रात का मनोहर चित्रण हुआ है।

'रुककर जाती हुई रात का
अंतिम छाहो भरा प्रहर हैं
श्वेत धुएँ के पतले नभमें
दूर झाँवरे पडे हुए सोने से तारे
जगी हुई भारी पलकों से पहारा देते
नींदभरी मंदी बयाल चलती हैं
वर्षा-भीगा नगर
भोर के सपने देख रहा हैं अब भी
थकी हुई रंगीनी में डूबा प्रकाश अब दिख जाता
रेशम, पर्दों, सेजों, निद्रा भरे बंधनों की छाया-सा।' 91

माथुरजी के कुछ कविताओंमें प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण अप्रतिम सफलता से हुआ है। उन्होंने प्रकृति को उसी रुपमें अंकित किया हैं जैसी उसकी अनुभूति उन्हें हुई हैं। इस दृष्टिसे उनका द्वितीय काव्यसंग्रह 'नाश और निर्माण' की कविता वसंत की रात उल्लेखनीय है। और यह कविता प्रारंभ से अंत तक वसंत की रंगीनी एवं उसके प्रभाव से पूर्ण हैं। वसंत आनंद का प्रतीक हैं, माथुरजी भी उसके आगमन से हर्षित और उल्लसित होते हैं। उदा.

'आज हैं केसर रंग रंगे वन
रंजित शाम की फागुन की खिली पीली-कली-सी
केसर के वसनों में छिपा तन
सोने की छाँह-सा
बोलती आँखोंमें
पहिले वसंत के फूल का रंग हैं। 92

माथुरजीने फिर स्पष्ट करना चाहा है कि वसंत के मादक और मोहक वातावरण का मानवपर क्या प्रभाव पडता हैं। इसका बहुत स्वाभाविक वर्णन कविने किया हैं। जैसे -

गोरे कपोलों पे होले से आ जाती
पहिले ही पहिले के
रंगीन चुंबन की सी ललाई।' 93

प्रतीकों का आश्रय लिए बिना कविने सर्वत्र प्राकृतिक उल्लास का चित्रण किया है। मधुवन का प्रत्येक कण उल्लसित हैं, आनंदित हैं, मयूर नाच रहें हैं, भ्रमर गुंजार कर रहें हैं, प्रवृत्ति का

ऐसा स्वच्छ और सरल चित्र अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

'फूलारे फिर से ये मधुवन
छिटका कन-कन में हँसती कलियों का मुसकाता यौवन
नीचे मतवाले मयूर डाली-डाली पर पागल बन
खेल रहे हैं आँख मिचौनी गाने गाकर मधुर अली
तरु भी गाते सुख का मर्मर
रसके झरते-झरते झर-झर।' 94

'आज शरद की पूरनमासी' इस कवितामें कविने शरद पूर्णिमा का सुंदर चित्रण किया हैं। नीले आकाशमें चाँद खिल रहा हैं, श्वेत चाँदनी चारों ओर बिखरी हैं। ओसकन मोतीयों की तरह दिखायी दे रहें है।

'आज शरद की पूरनमासी
लिए गुलाबी ठण्डक फैली
श्वेत चाँदनी धुली डगरमें
ओसकनी सी हँसी खिली हैं
मोती के इस राजनगर में।' 95

पृथ्वी के स्वर्ग कश्मीर के अद्‌भूत सौंदर्य का चित्रण कविने बडे मनोयोग से किया हैं। वहाँ के सौंदर्य और भी चार चाँद लगानेवाले हिमशैली, केसर की कयारियों, चिनार और देवदार के वृक्षों तथा झील का चित्र कविने इसप्रकार किया हैं -

'यह कमल धरा का बरकीला
यह झील कटोर चमकीला
केसर की झांई से पीला
लालिम चिनार के पेड
हैं स्वर्ग एक कल्पना
सत्य हैं काश्मीर।' 96

अपनी एक कवितामें कवि ने प्रातःकाल का चित्रण इतना सरल और सजीव रुपमें किया हैं कि प्रातःकाल के प्रकृति के छटा का पूरा दृश्य आँखोंके सामने उभर जाता हैं। प्रभात का समय हैं, पूर्व दिशामें लाली छाई है, ऐसा प्रतीत होता हैं कि उषा सोना लुटा रही हैं। पुष्प मुस्करा रहें है। उनपर ओस बिन्दु पडे हैं ऐसा लगता हैं कि पुष्प ओसकणों की अंजली भरकर अर्घ्य चढा रहे हैं।

सारे वनमें नुखशांति छा गयी है। जैसे -

'यह सुनहला दिवस आया
गगन ने मोती लुटाये, उषाने सोना लुटाया
झुरमुटो से झांककर
ये फूल भी हैं मुस्काते
अर्घ्य देने को तुहिन कन
अंजली में भरे लाते
हँस उठी वनराजि फिर सुख-शांति का मधुमास आया।' 97

'नाश और निर्माण' की कविताओंमें कविने प्रेमी के हृदय की निराशा की अधिकतामें प्रेमी कभी-कभी प्यारपर ही संदेह करने लगता है और जब कभी अतीत के सुखद कुछ पल एवं मिलन की यादें आ जाती हैं तब वह अत्याधिक व्याकुल हो जाता है। इस प्रसंग में प्रकृति का चित्रण भी प्रणयी की मानसिक दशा के अनुकूल हुआ है। उदा.

'कौन थकान हरे जीवन की
बंशीमें अब नींद भरी हैं
स्वरपर पीत साँझ उतरी हैं
बूझती जाती गूँज अखीरी
अब सपनोंमें शेष रह गई
सुधियाँ उस चंदन के वन की।' 98

'नाश और निर्माण' की कई रचनाओंमें व्यक्त प्यारमें वासना एवं भोग का पुट होते हुए भी चित्रण में नवीनता के दर्शन होते हैं। उदा.

'इस रंगीन साँझ में तुमने
पहने रेशम वस्त्र सजीले
भरी गोल गोरी कलाईयों में पहिनी थी
नयन डोर-सी वे महीन रेशमी चूडियाँ
चंदन बाँह उठाते ही में
रिवसल चली वे तरल गूँजसे
आज यही रस डूबा चाँद बन गई हो तुम
याद आये मिलने वे
मसली सुहागिन सेजपर वे सुमने वे।' 99

कवि माथुर के तृतीय काव्यसंग्रह 'धूप के धान' में तो 'भोर एक लैंडस्केप', 'शाम की धूप', 'सावन के बादल', 'सायंकाल', 'बरफा का चिराग', 'रात हेमंत', 'धूप और उन', 'न्यूयार्क की एक श्याम', 'न्यूयार्क के फॉल', 'चाँदनी गरबा', 'सिंधु तट का यात्री', 'नये साल की साँझ', 'तीन ऋतु', 'चित्र रात हैं', 'चंद्रप्रिमा', 'ढाकवनी', 'सावन की रात', आदि कविताएँ प्रकृति संबंधी हैं। इसप्रकार पैंतालीस कविताओंके पूरे काव्यसंग्रहमें पच्चीस कविताये प्रकृतिवर्णन युक्त है। इस काव्यकृति की कविताओंमें अंकित प्रकृति सौंदर्यमें नवीनता, सरसता एवं हृदय झूम लेनेवाली रसमयता आदि गुणोंकी अधिकता हैं।

प्रकृति चित्रण की दृष्टि से 'धूप के धान' की 'ढाकवनी' नामक कविता विशेष रुपसे उल्लेखनीय हैं। इस कवितामें कवि माथुर ने प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण किया हैं। जैसे -

'लाल पत्थर लाल मिट्टी
लाल कंकड लाल बजरी
लाल फूले ढाक के बन
डॉग गाती फाग कजरी
सनसनाती साँझ सूनी, वायु का कठला खनकता
झीगुरों की खंजडीपर झाँझ सा बीहड झनकता।' 100

'शाम की धूप' में कविने प्रकृति चित्रण के माध्यमसे आधुनिक जीवन का चित्रण किया हैं।

'चल पडी तेज हवा
बदल गया मौसम
आ गयी धूपमें कुछ गरमाई
बढ गया दिन का उजेला रास्ता
जिसपें सूरज के चमकते पहिये।' 101

उसके बाद कवि ने सायंकालीन प्रकृति सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है।

'पड गयी मंद हवा
हो गयी सुनहरी धूप
पेड के पास सूर्य जा पहुँचा
जिसके पत्तोंका रंग लाल हुआ।' 102

उसके बाद कविने आधुनिक जीवनके कोलाहाल को भी चित्रित किया हैं। जैसे -

'और सडकोंपर लौटता हैं शोर
तीसरे पहर के सुनसान की तोड
कंकरीटोंपें बूट धूल भरे
गूँजते अनमिली आवाज के साथ
घँटियाँ बज रही हैं रिक्शों की
बीसियों साइकिलों की पाँते
कैरियल, टोकरी या हैडिलमें
कुछमें खाली कटोरदान बँधे।' 103

प्रकृति के रुपमें रोमानी भावोंको प्रकट करनेमें भी माथुरजी को सफलता मिली हैं। प्रेमभाव के मधुर अभिव्यंजना के साथ प्रकति के सफल चित्रण बन पडे है। माथुर के काव्यमें प्रकृति के प्रति रोमानी वृत्ति प्रारंभसे ही दिखायी देती हैं। 'रात हेमंत की' कवितामें माथुरजीने रात को ऐसी कामिनी बताया हैं जो अपने पति की सेज गरम करने के लिए लिपटकर सो गई है। उदा.

'दीप तन बन उष्म करने
सेज अपने कन्त की
नयन लालिम स्नेह दीपित
भुज मिलन तन गंध सुरभित
उस नुकीले वक्ष की
वह छुबन, उकसन, चुभन अलसित
कामिनी-सी अब लिपटकर सो गयी हैं
रात यह हेमंत की।' 104

हमें दिखाई देता हैं कि माथुरजी के काव्यमें ऋतुगीत वनस्पति, कटीली हवा, रंगीन चुंबन रेशमी छाँह आदि के सिवा प्रकृति का कोई चित्र ही पूरा हुआ दिखायी नहीं देता 'रेडियम की छाया' यह कविता रोमानी भावोंसे युक्त है। उसमें सूनी रात का चित्रण किया गया हैं। इस कविता में वातावरण की निर्मिती ऐसी हुई है कि मिलन की उत्कंठा स्पष्ट दिखायी देती हैं। जैसे -

'सूनी आधी रात
चाँद कटोरे की सिकुडी कोरोंसे
मंद चाँदनी पीता लम्बा कुहरा
सिमट लिपट कर।' 105

'आज हैं केसर रंग रंगे वन' इस कवितामें परस्पर अलिंगन, प्रेम और मिलन समय की लज्जा को कपालों की ललाई और अन्य प्राकृतिक संकेतों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। प्राकृतिक सौंदर्य और देहिक सौंदर्य को मिटाकर लिखी गई यह कविता माथुरजी की एक सर्वोत्कृष्ठ कविता है। उदाहरण के लिए देखिए -

'आज हैं केसर रंग रंगे वन
रंजित शाम भी फागुन की खिली पीली कली-सी
केसर के वसनोंमें छिपा तन
सोने की छाँह-सा
गोरे कपोलों पे हौले से आ जाती
पहिले ही पहिले के
रंगीन चुंबन की सी ललाई।' 106

'रुप विभ्रमा चाँदनी' नामक कवितामें चाँदनी को आधुनिक सुंदर नारी के रुपमें देखा गया हैं। आधुनिक नारी की भाँति वह छरहरे बदन की हैं, स्लीवलेस ब्लाऊज पहने हैं, मुँह में इलायची चबाती हुई, हल्के कदम रखती हुई बेफिक्र मस्तीमें वह जा रही हैं। यहाँ चाँदनी निर्जीव न रहकर सजीव नारी के रुपमें सामने आयी हैं। कवि चाँदनीमें अपने प्रेयसी का रुप देखता हैं। कवि के शब्दोमें -

'स्लीवलेस ब्लाऊज पहने
छटहरी चाँदनी
पेडों की चमकदार जालियों तले
बेफिक्र कदम रख चलती
मुँह में मंद-मंद इलाइची चबाती।' 107

गिरिजाकुमार माथुरजीने जब विदेशी यात्रा की और वहाँ के प्राकृतिक वातावरणं से वे बहुत प्रभावित हुअे। युरोपीय प्रकृति के अनेक सुंदर चित्रण उन्होंने अपनी कविताओंमें व्यक्त किए हैं। इस दृष्टिसे 'न्यूयार्क की एक शाम', 'न्यूयार्क में फाल', 'सिन्धु तट की रात', आदि कवितायें महत्वपूर्ण है।

विदेशी वातावरणमें पहुँचकर कवि आश्चर्यचकित हो जाता हैं। वहाँ की रोमानी ऋतु, धन, नृत्य, विलास आदि से उनका शरीर रोमांचित हो जाता है। उदा.

'स्याह सिंधु की इस रेखापर
हैं झिलमिली तिलीस्मी दुनिया
हुमक उमगती याद फेन-सी
छाती में हर बार सलोनी
धन, विलास, मद, नृत्य केलि रस
ऋतु रोमानी तन रोमांचित।' ।08

'न्यूयार्क में काल', कवितामें माथुरजीने विदेशी वातावरण का मनोहर चित्र खींचा हैं। जैसे -

'थम गई बरसात नभ
आ गया हैं नायलन सा पारझीना
यह खुला मौसम
मनोरम फॉल का मौसम
हिमानी रात
ठण्डी धूप का मौसम।' ।09

इसप्रकार माथुरजीने प्रकृति के विविध रुपोंको चित्रित किया है। प्रकृति का सर्वाधिक प्रयोग कर माथुरर्जने वातावरण निर्माण के परिप्रेक्ष्यमें रोमानी अनुभूतियों को सुंदर ढंगसे प्रस्तुत किया है। प्रकृति के प्रति रोमानी भाव, प्रकृति के माध्यम से लोकजीवन तथा ग्राम्य चित्र खींचनेमें कवि को अधिक सफलता मिली हैं।

वैज्ञानिकता

आज की दुनियामें जो विज्ञान और टैक्नोलौजीका प्रभाव है, वह प्रभाव गिरिजाकुमार माथुरजी के काव्योंमें भी दिखायी देता हैं। 'कल्पान्तर' यह उनका विज्ञान काव्य हैं।

कल्पान्तर - कवि ने अपने अमेरिका प्रवाससे लौटने के बाद सन ।953 में विज्ञान काव्य का पहला पद्य नाटक लिखा। इसका एक अंश पद्य नाटक के रुपमें आकाशवाणी दिल्लीपर आयोजित किए गए एक सप्ताह के पहले नाटय समारोहमें 26 मार्च ।953 को एक घंटे के लिए प्रसारित किया गया था। उस समय रेडिओं रुपक को 'शांति विश्व' के नाम से जाना जाता था। कवि ने इसका अंतिम रुप परिवर्तित और संबोधित करके ।960 में पूरा किया था, जिसका एक लंबा अंश 'कल्पना' नासिक पत्रिका हैद्राबादमें ।960 में प्रकाशित हुआ था। विज्ञान के कारण आज जो चारों

तरफ बढती हिंसा हैं, आदमी के लिए खतरा तथा प्रकृति का शोषण है, आदि समस्याएं 'कल्पान्तर' में उठाई गई है।

स्वयं गिरिजाकुमार माथुरजीने 'कल्पान्तर' की भूमिकामें लिखा है - 'आधुनिक युग की ऐतिहासिक चुनौतियों को अभिव्यक्त देनेवाला पहला विज्ञान काव्य है। इसकी प्रेरणा कोई पूरी कथा या प्राचीन चरित्र प्रतीक न होकर विज्ञान की प्रचुर एवं परीक्षित्त ज्ञान भूमिपर अवस्थित हैं। अब तक अधिकांश काव्य कोई न कोई पौराणिक आख्यान या ऐतिहासिक घटना का आधार लेकर लिखे जाते रहें है। और प्रकारांतर से उन्हें वर्तमान संदर्भोंके साथ अक्सर जोडा जाता रहा हैं। इसके विपरीत 'कल्पान्तर' की विषय-वस्तु समकालीन दुनिया के बीच से सीधे उठाई गई है। और उसमें काव्य, बिंब, प्रतीक योजना तथा शैली की एक नूतन काव्य-भूमि उद्घाटित हुई हैं। निस्सीम अंतरिक्ष में फैले अनंत ग्रह नक्षत्रों के बीच पृथ्वी के विराट अस्तित्व और जीवंत अद्वितीयता से काव्य प्रारंभ होता हैं। मानवीय जीवन के जन्म और विकास की गाथा, आदमी की आधुनिकतम सभ्यता, समाज-व्यवस्था, इतिहास, राजनीति पध्दतियों के विचारधारात्मक संघर्ष, सत्ता और प्रभुता की अंर्तराष्ट्रीय क्रुर प्रतिस्पर्धा, सर्वग्रासी शुध्द पर्यावरण का प्रदुषण और अण्विक संहार की आसन्न भयावहता के संदर्भमें शांति की परम अनिवार्यता को काव्य के एक क्षिप्र-सूत्रमें पिरोकर 'कल्पान्तर' में प्रस्तुत किया गया है।' ।।0

'कल्पान्तर' काव्यमें भविष्य के लिए संदेश हैंकि आज जो अलग-अलग परम विरोधी शत्रु हैं। अंतरिक्ष युग के समाजमें इनका उत्कृष्ट रुपमें समन्वय होगा। अंतिम संदेश है - आर्थिक साम्य के मूल आधारपर लोकतांत्रिक सांस्कृतिक मुक्तियाँ।' ।।।

आज की दुनियामें विज्ञान और टैक्नालौजी का प्रभाव है। वह 'न्यूयार्क में फाल' (1953) कविता से आरंभ होता हैं। हमारे यहाँ आज तक प्रकृति, पौराणिक संदर्भ दर्शन रहें हैं। उसके बाद प्रेम शृंगार, परंपरा, इतिहास, यह छः प्रेरक मूल हैं। विज्ञान और टैक्नालौजी की भूमि प्रेरक नहीं होती। इन कविताओंमें सबसे अधिक टैक्नोलौजी युगीन सभ्यता को काव्य की प्रेरणा माना जाता हैं। बिंब शब्द, भावना ये वैज्ञानिकता का सूत्रपात हिंदी कवितामें 'न्यूयार्क में फाल' आदि से होता हैं। जैसे -

थम गई बरसात नभ
आ गया हैं, नायलॉन सा पारसीना
मनोरम फॉल का मौसम

समुद्री हवा पर उडता हुआ
पत्तों भरा ऑटम।' ।।2

विज्ञन के अविष्कारों ने समाज में उन्नति तो हुई है। किंतु इस विज्ञान के कारण जीवन की कोमल और रंगीन भावनाएँ मशीनों की घटाओं से विलुप्त-सी होती जा रही हैं। जीवनकी सरसता कोमल भावनएँ समाप्त हो रहीं है। उदा.

'मिट रही रंगीन जीवन की घटा
छा रही हिंसक मशीनी घन घटा
आज जीवन को चुनौती मौत की
नीति कैदी हैं कुटिल कलघौत की।' ।।3

माथुरजीने आगे बताया है कि विज्ञान संशोधन ने सभ्यता को धकेलकर अपना वैज्ञानिक वर्चस्त स्थापित किय हैं और इसका बहुत दुख कवि को हैं।

'नीले, लाल, पीले रिबन
नभ में सर्चलाईट के
भयानक घूमते मंडल
सुनहरे सूत्र संचालित
कि डोरे खिंच रहे जिनके
सात काले समुन्दर पार
हवा को फाडते जाते
उडन बम भर बडे बममार
लगाने सभ्यता में आग।' ।।4

विज्ञान ने मानव को सुख, समृध्द किया है, किंतु यह भी सत्य है कि विज्ञान ने मानव को निष्क्रिय और कर्महीन बनाया है। विज्ञान की चकाचौंधमें मानव अपने को ही भूल बैठा हैं। वह विज्ञान का गुलाम बन गया हैं, अतः माथुरजी इस बात को ध्यानमें रखकर यांत्रिक सभ्यता का विरोध करते हैं। यांत्रिक युग पर्वत और समुंदरपर विजय के लिए प्रयत्नशील हैं। किंतु उसमें मानवता का गला ही घोंट दिया है। कवि के शब्दोमें -

'अविष्कारों के सुख साधन
सब अस्त्र बन गये शोषण के।' ।।5

बौध्दिकता

कवि माथुरजी के काव्यमें बौध्दिकता का नवोन्मेष भी दिखायी देता हैं, उन्होंने तार-सप्तक के वक्तव्यमें अपने विचार प्रकट किये है - 'कविता की जिस चेतना का प्रादुर्भाव सन 1936-40 में हुआ था, उसने पिछली समस्त मान्यताओं को बदल डाला और एक अभूतपूर्व बौध्दिक नवोन्मेष (इन्टेलेक्चुअल रेनासा) को जन्म दिया। पूरी की पूरी मर्यादा परिधियाँ, प्रति स्थापित कर दी गयी। इतनी बडी तत्विक क्रांति हिंदी कवितामें कभी नहीं आयी थी।' ।।6

इस क्रांति के अनुसार मानव-मन आत्मस्थ होकर चिंतन करने लगा। उसके जीवनमें मानवीय आस्था मृत्युंजयी भावना और संत्रास और मृत्युबोध आदि के पुट पाए जाने लगे। एकाकीपन और उदासी का चित्र देखिए -

'रिक्त कमरे की उदासी बढ रही हैं
दूर के आते स्वरोंमें
दूर होता जा रहा हूँ मैं स्वयं ही
पास की दीवाल पर के चित्र सारे
शून्य द्वारोंपर पडे रंगीन पर्दे
वायु की साँसो-भरी एकान्त खिडकी
वह अकेली-सी घडी
वह दीप ठण्डा
और रातों-जगा वह सूना पलंग भी
दूर होता जा रहा हैं, दूर कितना
किंतु साथी दूर पर बिछुडा हमारा।' ।।7

मानवी आस्था का चित्र इसप्रकार प्रस्तुत किया हैं।

'जिस सीमापर पहुँचन पायी हुईं पराजित
क्रुफ तोडने की, क्रुसेडों की तलवार
वहाँ विश्व-जय हुई प्यार के एक घूँट से।' ।।8

मृत्युंजयी भावन को कवि माथुरजीने इसप्रकार अंकित किया -

'इन धौलागिर सुमेरुओंपर
मिट जाती स्वयं मृत्यु आकार।' ।।9

संत्रास का चित्र

'सन्दर चीजें ही मिलती हैं सबसे पहले
यह फूल, चाँदनी, रुप, प्यार
आँसू के अनगिन ताजमहल।' 120

मृत्युबोध का चित्रण

1. 'मैं शुरु हुआ मिटने को सीमा-रेखापर
रोन में था आरंभ किंतु गीतोंमें मेरा अन्त हुआ।' 121

2. 'हैं अंत हुआ जाता मेरा
इन अन्तहिन इतिहासोंमें' 122

3. 'फिर समा गया
गंगा की गोरज लहरोंमें
जीवन का वह रंगीन-चाँद। 123

कवि माथुरजीने मनुष्य के दुविधा मनस्थिति का चित्रण किया है। दुविधा और अनिश्चय का चित्र देखिए -

'एक और तर्क हैं
एक और संस्कार
दोनों तूफानों का
दुहरा हैं अंधकार
किसको मैं छोडूँ
किसको स्वीकार करुँ।'
ओ मेरी आत्मा में ठहरें हुए इन्तजार।' 124

बौध्दिक नवोन्मेष के कारण गिरिजाकुमार माथुरजी की कवितामें विचारतत्व हमें दिखायी देते हैं। उदा.

1. 'पदचिन्हों पर पदचिहों के अंक बन गये
कितने स्वर, ध्वनियाँ, कोलाहल डूब गये हैं
किंतु सृजन की और मरण की रेखाओंमें
चिर ज्वलंत निष्कंप एक लौ फिरती जाती।' 125

2. 'सीमित अस्तित्व व्याम, सीमित हैं देश-काल
सीमित संदर्भ सभी, व्यक्ति, राष्ट्र तर्क-जाल
शक्ति, स्वार्थ, संप्रदाय, प्रभुताओं के ललाट।' 126

अन्य विशेषताएँ

नयी कविता के प्रमुख कवि होने के कारण विकास हुआ है। जो नयी कवितामें अपनी अहमियत रखती है। ऐसे प्रतृत्तियोंमें लघु मानव की प्रतिष्ठ, क्षणबोध समिष्ट प्रेरित, व्यक्ति चेतना, अनुभूति का खरापन, यथार्थ बोध, आस्था, जिजीविषा, सांस्कृतिक बोध - . आधुनिक रुपमें गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में भी मिलती है। 'धूप के धान' से लेकर 'भीतरी नदी की यात्रा' तक में इन प्रवृत्तियों का समावेश हैं। आज का कवि क्षणोंमें जीता हैं वह किसी भी पल को हाथ से बेकार नहीं जाने देता हैं। वह चाहता है कि हर पल को उसकी समग्रतामें जीकर ही जीवन सार्थकता पा सकता हैं। गिरिजाकुमार माथुरजी भी इसके अपवाद नहीं हैं। उन्होंने अपनी 'चंदरिमा' जैसी कविताओंमें अपनी क्षणानुभूति को यों व्यक्त किया है -

'यह झकाझक रात
चाँदनी उजली कि सुईमें घिरों लो ताग
चाँदनी को दिन समझकर बोलते हैं काग
चाँद पूरा साफ
आर्ट पेपर जो कटा हुआ हो गोल
यह नहीं चेहरा तुम्हारा
गोल पूनम सा
माँसल चिकने तनक
क्योंकि यह तो सामने ही दिख रहा हैं
बरसों पुरानी बात
भूली याद।' 127

लघु मानव की प्रतिष्ठा नयी कविता का प्रमुख स्वर है। व्यक्ति की लघुता ही उसे महत्ता प्रदान कर सकती हैं। इसीलिये गिरिजाकुमार माथुर ने अपनी कविताओंमें लघु मानव की प्रतिष्ठा की हैं। उन्होंने अपने कविताओंमें मनुष्य का जीवन चित्रित किया है। कवि यह भी विश्वास रखता हैं कि क्षुद्रता और विकृतियों के कदममें पडा हुआ आज का साधारण मानव ही कल का नेता

विश्वनिर्माता, महान कलाकार अथवा वैभव संपन्न कलाकार बन सकता हैं।

'हम भी हो सकते थे
नेता विश्व निर्माता
देश के विधाता
महापुरुक्ष कलाकार।' ।28

उन्होंने अपनी अनेक कविताओंमें जिस व्यक्ति चेतना को अभिव्यक्ति दी है। वह समिष्ट से प्रेरित हैं। उसमें व्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक जीवन भी पूरी तरह अभिव्यक्त किया हैं। जो माथुर के काव्यमें देखा जा सकता हैं। कवि अपने व्यक्तित्व द्वारा भोगे हुअे सत्य को अनुभूति की प्रामाणिकता के रुपमें चित्रित किया है। उन्होंने तो सुख-दुख अर्थात जीवन के राग-संघर्ष और इनसे मिलकर बनी जीवन की सच्चाईयों को ही काव्यमें रुपाकार प्रदान किया हैं। नया वसंत, रेडियम की छाया, 'चूडी का टुकडा' और 'मशीन का पूर्जा', जैसी कविताओंमें कवि की अनुभूति की प्रामाणिकता को देखा जा सकता है। जीवन के रागात्मक पक्षसे संबंधित और संघर्ष और समस्याओं से आक्रांत जीवन की सच्ची अनुभूतियाँ माथुरजी के काव्यमें अभिव्यक्त हुई हैं।

संपूर्ण सामाजिक विषमताओं, भयावताओं और अभिशापों से ग्रस्त जीवन का रस पीकर भी कवि माथुर की जीवन के प्रति आस्था विश्वास और मंगल भावना हैं। उनके प्रारंभिक काव्यमें जैसी आस्था है, वैसी ही आस्था और मंगलवादी भावना उनके बाद के रचनाओंमें भी दिखायी देती हैं। उन्होंने स्वयं नयी कविता व्याख्या करते हुअे लिखा हैं कि - 'नयी कविता की नजर अतीत की श्यामलता और संघर्षमय कटुता के बीच भारतीय आदर्शानुसार उसकी आशाकी लौ निष्कंप हैं, क्योंकि उसे विश्वास हैं कि आज चाहे जो स्थिति हो मानवता का भविष्य कल्याणमय हैं और वह हर अमंगल शक्तिपर निश्चित रुप से विजय प्राप्त कर लेगा।' ।29

'हैं अतित रैन मिलन
दीपक इतिहास का
पीत प्रभा जीवन
अवरुध्द पथ विकास का
दीप बने सूर्य करे नवजन वंदन
ओ भविष्य सूर्य, धरों मुक्ति के चरण। ।30

सामान्यतः धर्म, दर्शन, भीति और संस्कृति आदि जीवन के के उच्च मूल्यों में नये कवि की आस्था बहुत कम हैं, किंतु माथुर का काव्य इसका अपवाद है। उन्होंने नवीनता के मोहमें इन सभी तत्वोंकी उपेक्षा नहीं की। उन्होंने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को नये अर्थ प्रदान किये और पौराणिक पात्रोंके माध्यम से माथुरजी ने समसामायिक जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया हैं। मानवतावादी कवि होने के नाते माथुर ने एक सार्वभौम सत्य की प्रचिती करायी। उनका इतिहास बोध भी गहन हैं। इतिहास कवितायें में संकलित है, उनमें इतिहास के प्रति उनके नये दृष्टिकोन को देखा जा सकता हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि गिरिजाकुमार माथुरजी के काव्यमें प्रणयानुभूति हमें मिलती है जो कवि के इन्द्रियता को व्यक्त करती हैं। जिसमें मिलनातुरता, लालसा, भोग आदि भावोंका अंकर रोमानी शैलीमें किया हैं। माथुरजी के काव्यमें जैसे मिलन का स्वर मिलता है, वैसे विरह वेदना का भी स्वर मिलता हैं। जीवन के प्रति तीव्र आसक्ति के कारण उन्होंने केवल सुखद क्षणोंकी मधुर मादक अनुभूतियों को भी व्यक्त किया है, तो प्रेमजनितपीडाए विषाद और निराशा को भी अपने शब्दोंमें अंकित किया है तो कभी सौंदर्यानुभूति उनके काव्य की विशेषता हैं। माथुरजी रंग रोमांस की प्रवृत्ति के कवि होते हुअे भी विश्वबंधुत्व और मानवतावादी उनके काव्य का प्रमुख स्वर हैं। वैसे देखा जाय तो उनके काव्यमें राष्ट्रीयता की अपेक्षा विश्वकल्याण और विश्वबंधुत्व की भावना के रंग अधिक गहरे दिखायी देते, साथ ही यथार्थ बोध और सामाजिक दृष्टिकोण, लोकजीवन, प्रवृत्ति चित्रण, वैज्ञानिकता, बौध्दिकता आदि स्वर भी मिलते हैं।

संदर्भ

अध्याय - 4

1) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधी कवि (द्वारिका प्रसाद) पृ. 50।
2) छाया मत छूना मन पृ. 21
3) तार-सप्तक पृ. 129
4) मंजीर पृ. 6
5) वही पृ. 3 भूमिका
6) नाश और निर्माण पृ. 47
7) मंजीर पृ. 43
8) वही पृ. 19
9) छाया मत छूना मन पृ. 26
10) वही पृ. 58
11) मंजीर पृ. 19
12) वही पृ. 27
13) छाया मत छूना मन पृ. 51
14) वही पृ. 58
15) वही पृष्ठ 58
16) नाश और निर्माण पृ. 47
17) धूप के धान पृ. 58
18) वही पृ. 102
19) छाया मत छूना मन पृ. 46
20) धूप के धान पृ. 20,21
21) वही पृ. 23
22) वही पृ. 57
23) वही पृ. 20
24) गिरिजाकुमार माथुर और उनका काव्य से उद्धृत पृ. 120
25) छाया मत छूना मन पृ. 33
26) तार-सप्तक - वक्तव्य (पुनश्च) पृ. 149
27) वही पृ. 128
28) वही पृ. 133
29) वही पृ. 139
30) वही पृ. 136
31) वही पृ. 129
32) वही पृ. 127
33) छाया मत छूना मन पृ. 25
34) धूप के धान पृ. 51
35) वही पृ. 102
36) मंजीर पृ. 3
37) तार-सप्तक पृ. 142
38) वही पृ. 129
39) छाया मत छूना मन पृ. 28
40) वही पृ. 58
41) मंजीर पृ. 15

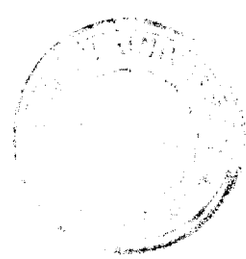

42) नयी कविता सीमाएँ और संभवनाएँ पृ. 136
43) एक अंधनगा आदनी पृ.8
44) धूप के धान पृ. 35
45) वही पृ. 30
46) वही पृ. 92,93
47) तार-सप्तक पृ. 147
48) धूप के धान पृ. 8, 9
49) वही पृ. 57
50) धर्मयुग (11 जन्वरी 1970) पृ. 21
51) धूप के धान पृ. 9
52) वही पृ. 8
53) वही पृ. 40
54) वही पृ. 1
55) वही पृ. 43
56) वही पृ. 36
57) वही पृ. 42
58) वही पृ. 108
59) वही पृ. 7
60) वही पृ. 3
61) वही पृ. 16
62) वही पृ. 62
63) वही पृ. 53
64) नाश और निर्माण पृ. 92, 93
65) वही पृ. 94
66) वही पृ. 87
67) वही पृ. 116
68) धूप के धान पृ. 26
69) वही पृ. 27
70) शिला पंख चमकिले पृ. 22, 23
71) धूप के धान पृ. 36
72) वही प्र. 86
73) नाश और निर्माण पृ. 63
74) धूप के धान पृ. 15, 17, 18, 19
75) वही पृ. 23 76) वही पृ. 83
77) वही पृ. 39 78) वही पृ. 112, 113
79) वही पृ. 53
80) नाश और निर्माण पृ. 69, 70
81) धूप के धान पृ. 89
82) वही पृ. 91, 92
83) वही पृ. 92
84) शिला पंख चमक्किले पृ. 3
85) वही प्र. 8
86) वही प्र. 9
87) गिरिजाकुमार माथुर और उनका काव्य से उद्धृत पृ. 125
88) मंजीर पृ. 3
89) तार-सप्तक वक्तव्य - माथुर पृ.124
90) वही पृ. 132
91) वही पृ. 134

92) मंजीर पृ. 17
93) तार-सप्तक पृ. 128
94) वही पृ. 127
95) वही पृ. 127
96) नाश और निर्माण पृ. 49
97) छाया मत छूना मन पृ. 38
98) धूप के धान पृ. 43
99) मंजीर पृ. 36
100) नाश और निर्माण पृ. 43
101) वही पृ. 69
102) धूप के धान पृ. 89
103) वही पृ. 24
104) वही पृ. 25
105) वही पृ. 26
106) वही पृ. 39
107) तार-सप्तक पृ. 130
108) वही पृ. 127
109) जो बंध नहीं सका पृ. 27
110) धूप के धान पृ. 57
111) वही पृ. 63
112) कल्पांतर - भूमिका - माथुर वक्तव्य 1, 2
113) वही पृ. 2
114) वक्तव्य - साक्षात्कार (माथुरजी के काव्य की बनावट और बुनावट से उद्धृत) पृ. 105
115) धूप के धान पृ. 63
116) वही पृ. 86
117) वही पृ. 5, 6
118) नाश और निर्माण पृ. 23
119) तार-सप्तक - वक्तव्य (पुनश्च) पृ. 150
120) वही पृ. 134
121) वही पृ. 47
122) वही पृ. 144
123) नाश और निर्माण पृ. 32
124) तार-सप्तक पृ. 142
125) वही पृ. 142
126) वही पृ. 143
127) वही पृ. 141
128) वही पृ. 166
129) वही पृ. 168
130) धूप के धान पृ. 88
131) नाश और निर्माण पृ. 67
132) नयी कविता सीमाएँ और संभवनाएँ पृ. 17
133) धूप के धान पृ. 81